हिन्दी दैनिक

R.N.I.NO.UPHIN/2014/59804

प्रयाग दर्पण

वर्ष : 08 | अंक : 153 | प्रयागराज, मंगलवार 13 सितम्बर , 2022 | हिन्दी दैनिक | पृष्ठ–4 | मूल्य : 3 रुपया

किसानों को दुर्घटना पर मुआवजा देगी सरकार

योगी सरकार ने शुरू की कृषक दुर्घटना कल्याण योजना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने किसानों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। ऐसी ही योजनाओं में से एक है यूपी कृषक दुर्घटना कल्याण योजना जिसके जरिए सरकार किसानों को किसी भी दुर्घटना के बाद उन्हें मुआवजा मिलेगा। मुआवजा राशि पांच लाख रुपये तक की हो सकती है। इस योजना का लाभ पाने के लिए किसानों को 45 दिनों के भीतर आवेदन देना होगा। सत्यापन के बाद सरकार के द्वारा उन्हें लाभ दिया जाएगा। योजना में दोनों हाथ–पैर खोने पर पांच लाख रुपये का मुआवजा मिलेगा, एक पैर खोने पर भी पांच लाख रुपये का मुआवजा प्रदान किया जाएगा। किसान की दुर्घटना में मृत्यु होने पर 05 लाख रूपए तक का मुआवजा राशि मिलेगी। यदि विकलांगता 25 फीसदी से अधिक हो लेकिन 50 फीसदी से कम हो, ऐसी स्थिति में 1 से 2 लाख के बीच सहायता दी जाएगी। इसके अलावा दुर्घटना में आंखे खो देने की स्थिति में 5 लाख रूपए तक की सहायता राशि प्रदान की जाएगी। किसान की दुर्घटना में मृत्यु होने पर 5 लाख रूपए तक का मुआवजा राशि मिलेगी। यदि विकलांगता 25 प्रतिशत से अधिक हो लेकिन 50 से कम हो, ऐसी स्थिति में 1 से 2 लाख के बीच सहायता दी जाएगी। इसके अलावा दुर्घटना में आंखे खो देने की स्थिति में 5 लाख रूपए तक की सहायता राशि प्रदान की जाएगी। योजना का लाभ लेने के लिए आवेदन करना आवश्यक है। आवेदन करने के लिए आवेदनकर्ता को उत्तर प्रदेश राज्य का होना जरूरी है। 14 सितंबर 2019 के बाद दुर्घटना का शिकार हुए किसानों को इस योजना का लाभ मिल सकता है। दुर्घटना में मौत हो जाने की स्थिति में मृतक के परिजन अप्लाई कर सकते हैं। योजना का लाभ 60 प्रतिशत या उससे अधिक विकलांगता से पीड़ित किसानों को दिया जाएगा। सबसे पहले दुर्घटना के 45 दिनों के भीतर किसान या उसके परिजनों को दुर्घटना सभी जानकारी जिला कलेकटर के कार्यालय में आवेदन पत्र में देनी होगी। इसके बाद ये आवेदन तहसील में जमा होगा , जिस दौरान सभी विवरणों की जांच अधिकारियों द्वारा की जाएगी। सत्यापन प्रक्रिया के पूरे होने आवेदक किसान को इस योजना के अंतर्गत लाभ प्रदान किया जाएगा। सबसे पहले योजना की आधिकारिक वेबसाइट ई–डिस्ट्रिक्ट की नच.हवअ.पद पर जाना होगा। होम पेज पर पंजीकृत उपयोगकर्ता लॉगिन के सेक्शन पर जाए। अब किसानों को पोर्टल पर लॉगिन पूरा करना होगा। जो पहले से पंजीकृत नहीं हैं उन्हें नवीन उपयोगकर्ता पंजीकरण के विकल्प में क्लिक करके पंजीकरण पूरा करना होगा। लॉगिन करें और आवेदन पत्र कृषि विभाग की सेवा के अनुभाग में मुखघ्यमंत्री कृषक दुर्घटना सहायता योजना में क्लिक करें। अगले पेज पर आवेदन पत्र खुल जाएगा। इसमें पूछी गई सभी जानकारी भरनी होगी,जैसे दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति का विवरण, दावाकर्ता का पता और व्यवसाय, दुर्घटना का विवरण आदि। आवश्यक दस्तावेज भी अपलोड कर आवेदन पत्र को सब्मिट करना होगा।

एयर इंडिया अगले 15 महीनों में अपने बेड़े में 30 विमानों को शामिल करेगी

नई दिल्ली। एयर इंडिया ने सोमवार को कहा कि वह इस साल दिसंबर से अपने बेड़े में 30 नए विमानों को शामिल करेगी, जिसमें चौड़ी बॉडी वाले पांच बोइंग विमान शामिल हैं। टाटा के स्वामित्व वाली एयरलाइन अपनी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सेवाओं को बढ़ाना चाहती है, जिसके तहत यह विस्तार किया जा रहा है। एयरलाइन ने अगले 15 महीनों में चौड़ी बॉडी वाले पांच बोइंग विमान और पतली बॉडी वाले 25 एयरबस विमानों को शामिल करने के लिए पट्टों और आशय पत्रों पर हस्ताक्षर किए हैं।

एयर इंडिया ने एक बयान में कहा, श्इन नये विमानों से एयरलाइन के बेड़े में 25 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि होगी। ये विमान 2022 के अंत से परिचालन शुरू करेंगे। हाल के महीनों में परिचालन में वापस आने वाले संकरी बॉडी वाले 10 विमानों और चौड़ी बॉडी वाले छह विमानों को छोड़ दें तो ये नए विमान एयर इंडिया के अधिग्रहण के बाद पहले बड़े विस्तार का प्रतीक हैं। टाटा समूह ने इस साल इंडिया का अधिग्रहण किया था। पट्टे पर लिए जा रहे विमानों में 21 एयरबस ए320 नियो, चार एयरबस ए321 नियो और पांच बोइंग बी777–200एलआर शामिल हैं।

राज्यों के साथ मिलकर जानवरों में फैले लंपी रोग को करेंगे नियंत्रित : मोदी

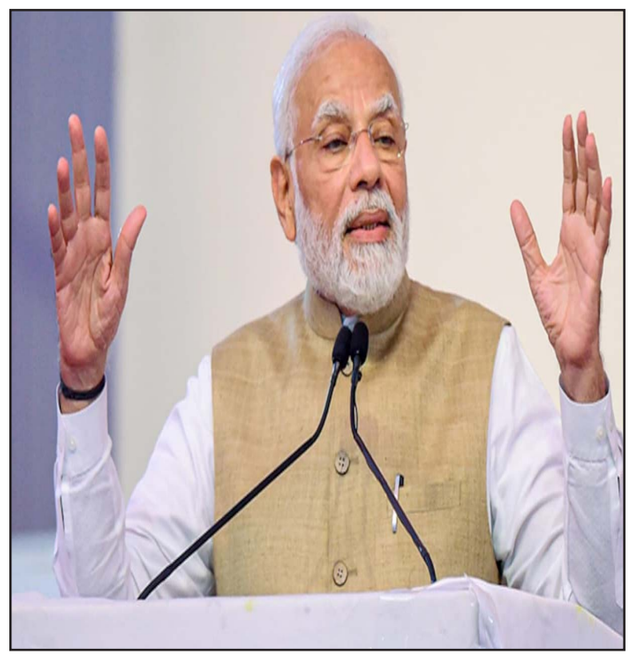

ग्रेटर नोएडा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कहा कि केंद्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर मवेशियों में ढेलेदार त्वचा रोग (लंपी) को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है। कई राज्य मवेशियों में ढेलेदार त्वचा रोग (एलएसडी) से जूझ रहे हैं और यह बीमारी डेयरी क्षेत्र के लिए चिंता का विषय बनकर उभरी है। मोदी ने यहां इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय डेयरी संघ विश्व डेयरी सम्मेलन 2022 को संबोधित करते हुए कहा, हमारे वैज्ञानिकों ने लंपी रोग के लिए स्वदेशी टीका भी तैयार किया है। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में भारत के कई राज्यों में इस बीमारी के कारण पशुओं की हानि हुई है। एलएसडी एक संक्रामक वायरल बीमारी है, जो मवेशियों को प्रभावित करती है और त्वचा पर गांठ, बुखार का कारण बनती है। इस बीमारी से पशुओं की मौत भी हो सकती है। मोदी ने आगे कहा कि पिछले 5–6 वर्षों में कृषि और डेयरी क्षेत्र में 1,000 से अधिक स्टार्टअप बनाए गए। भारत डेयरी पशुओं का सबसे बड़ा डेटाबेस बना रहा है और डेयरी क्षेत्र से जुड़े हर पशु को टैग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि श्एनिमल बेसश योजना के तहत आध ुनिक तकनीक की मदद से पशुओं की बायोमेट्रिक पहचान की जा रही है। इस अवसर पर मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे। कार्यक्रम में मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री संजीव बाल्यान भी उपस्थित थे। इस मौके पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद थे।

नोएडा: महिला प्रोफेसर ने सोसाइटी में सुरक्षा गार्ड को जड़ा थप्पड़, गिरफ्तार

नोएडा। नोएडा के सेक्टर 121 स्थित क्लो काउंटी सोसाइटी के गेट पर तैनात सिक्योरिटी गार्ड से एक महिला प्रोफेसर ने बदसलूकी की तथा उसे थप्पड़ भी जड़ दिए। पुलिस ने यह जानकारी दी। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित होने के बाद पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर महिला प्रोफेसर को गिरफ्तार कर लिया है। फेज–3 के थाना प्रभारी निरीक्षक विजय कुमार ने बताया कि रविवार को सेक्टर 121 स्थित क्लो काऊंटी सोसाइटी के गेट पर तैनात सुरक्षा गार्ड सचिन से उसी सोसायटी में रहने वाली महिला प्रोफेसर सुतापा दास ने गेट खोलने में देरी होने की बात पर बदसलूकी की तथा सुरक्षा गार्ड को ताबड़तोड़ थप्पड़ जड़ दिए। अधिकारी ने बताया कि इस मामले में सिक्योरिटी एजेंसी की तरफ से महिला के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया है। पुलिस ने आरोपी महिला को गिरफ्तार कर लिया है। उन्होंने बताया कि जांच के दौरान यह पता चला कि सोसाइटी निवासी सुतापा की कार पर लगा सोसाइटी का स्टीकर स्कैनर पर कुछ तकनीकी दिक्कतों के कारण स्कैन नहीं हो पाया। इससे गेट का बैरियर नहीं खुल पाया। सुरक्षा गार्ड सचिन ने जब बैरियर को खोला तो सुतापा ने कार को अंदर करने के बाद सुरक्षा गार्ड के पास आकर शिकायत की। सचिन ने जब बताया कि स्टीकर स्कैन नहीं होने से बैरियर ऑटोमेटिक नहीं खुल पाया तो सुतापा यह सुनकर गुस्से से आग बबूला हो गईं और सचिन को ताबड़तोड़ थप्पड़ जड़ दिए। पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। हाल में सेक्टर 126 क्षेत्र में एक महिला अधिवक्ता द्वारा सिक्योरिटी गार्ड से बदसलूकी का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था।

देश में कोविड-19 के उपचाराधीन मरीजों की संख्या कम होकर 47,176 हुई

नई दिल्ली। भारत में कोविड–19 के 5,221 नए मामले सामने आने से संक्रमण के कुल मामलों की संख्या 4,45,00,580 पर पहुंच गयी जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या कम होकर 47,176 रह गयी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के सोमवार सुबह आठ बजे तक के अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, संक्रमण से 15 मरीजों की मौत होने से मश्तकों की संख्या बढ़कर 5,28,165 पर पहुंच गयी है। मौत के नए मामलों में केरल द्वारा पुनर्मिलान किए गए चार मामले भी शामिल हैं। मंत्रालय के अनुसार, उपचाराधीन मरीजों की संख्या संक्रमण के कुल मामलों का 0. 11 प्रतिशत है जबकि कोविड–19 से स्वस्थ होने की राष्ट्रीय दर 98.71 प्रतिशत है। बीते 24 घंटे में उपचाराध ीन मरीजों की संख्या में 769 की कमी दर्ज की गयी है। गौरतलब है कि देश में सात अगस्त 2020 को कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या 20 लाख, 23 अगस्त 2020 को 30 लाख और पांच सितंबर 2020 को 40 लाख से अधिक हो गई थी।

कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा, केरल पहुंचने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत : राहुल गांधी

तिरुवनंतपुरम। केरल में कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे दिन सोमवार को यानी आज लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। पार्टी नेता राहुल गांधी ने सुबह वेल्लायानी जंक्शन से पदयात्रा शुरू की। कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा का केरल में 19 दिन का सफर राजध ानी तिरुवनंतपुरम के पारस्साला इलाके से रविवार को सुबह शुरू हुआ और इस दौरान कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष 19 दिनों में मलप्पुरम के नीलांबर तक 450 किलोमीटर लंबी यात्रा करेंगे। कल भी और आज भी गांधी के साथ पदयात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। वहीं लोग गांधी की अगुवाई में शुरू हुई इस यात्रा को देखने के लिए भी सड़क के दोनों ओर एकत्र हुए। इससे पहले रविवार को नेमोम में पहले दिन की यात्रा समाप्त होने पर गांधी ने कहा कि केरल सभी का सम्मान करता है और खुद को कभी विभाजित नहीं होने देता और न ही नफरत फैलने देता है। उन्होंने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा एक प्रकार से इन्ही विचारों का विस्तार है। उन्होंने कहा था, 'एकजुट रहना तथा सौहार्द के साथ मिल कर काम करना केरल के लोगों के लिए स्वाभाविक और सामान्य बात है और उन्होंने देश को यह दिखाया है। श राहुलगांधी ने कहा, 'केरल यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करता है। यह न तो खुद को विभाजित होने देता है और न ही राज्य में नफरत फैलने की इजाजत देता है। तो एक प्रकार से भारत जोड़ो यात्रा केरल के इस विचार का विस्तार मात्र है। कांग्रेस की 'भारत जोड़ो यात्रा का केरल में 19 दिन का सफर राजधानी तिरुवनंतपुरम के पारस्साला इलाके से रविवार सुबह शुरू हुआ। तीन घंटे की यात्रा का पहला चरण यहां नेय्यत्तिनकारा में कल पूर्वाह्न लगभग साढ़े दस बजे समाप्त हुआ और तीन घंटे का दूसरा चरण कल शाम पांच बजे से शुरू हुआ।

मजबूत कांग्रेस विपक्षी एकजुटता की स्तंभ है : कांग्रेस

नई दिल्ली । कांग्रेस ने सोमवार को कहा कि उसकी मजबूती विपक्षी एकजुटता का स्तंभ है तथा उसके मजबूत हुए बिना विपक्ष की एकता संभव नहीं है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि 'भारत जोड़ो यात्रा विपक्ष की एकजुटता के लिए नहीं, बल्कि कांग्रेस को मजबूत बनाने के लिए है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, 'मुझे खुशी है कि भारत जोड़ो यात्रा के बाद यह हाथी (कांग्रेस) जग गया है, हाथी चल रहा है। सभी पार्टियां इस ओर देख रही हैं कि कांग्रेस क्या कर रही है। रमेश ने कहा, विपक्ष की एकता तभी संभव होगी जब कांग्रेस मजबूत होगी।

विपक्ष की एकता का यह मतलब नहीं है कि कांग्रेस कमजोर होकृ यह यात्रा विपक्षी एकता के लिए नहीं, कांग्रेस को मजबूत करने के लिए है। हम प्राथमिकता दे रहे हैं कि कांग्रेस को और मजबूत तथा प्रभावशाली बनाया जाए। उन्होंने यह भी बताया कि यह यात्रा आज कुल 102 किलोमीटर की दूरी तय कर लेगी। इस यात्रा की औपचारिक शुरुआत सात सितंबर को कन्याकुमारी से हुई थी और पदयात्रा आठ सितंबर से आरंभ हुई।

आप का गुजरात में पार्टी कार्यालय पर छापेमारी का दावा, पुलिस का इनकार

अहमदाबाद। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता इसुदान गढ़वी ने दावा किया है कि आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के यहां पहुंचते ही स्थानीय पुलिस ने अहमदाबाद के नवरंगपुरा इलाके में पार्टी कार्यालय पर छापा मारा, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। हालांकि, एक पुलिस अधिकारी ने इस दावे का खंडन किया और कहा कि जब आप पदाधिकारियों से संपर्क किया गया तो उन्होंने इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी कि छापेमारी किसने की और वास्तव में क्या हुआ। दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल रविवार शाम अहमदाबाद पहुंचे और उनका सोमवार और मंगलवार को ऑटो–रिक्शा चालकों, व्यापारियों, वकीलों और सफाई कर्मचारियों के साथ टाउन हॉल में बैठकें करने का कार्यक्रम है। आप के राष्ट्रीय संयुक्त महासचिव गढ़वी ने रविवार देर रात एक ट्वीट में कहा, 'अरविंद केजरीवाल के यहां पहुंचते ही स्थानीय पुलिस ने अहमदाबाद में आप कार्यालय पर छापा मारा। वे दो घंटे तक कार्यालय की तलाशी लेने के बाद चले गए क्योंकि उन्हें कुछ नहीं मिला। गढ़वी के ट्वीट को टैग करते हुए केजरीवाल ने ट्विटर पर एक पोस्ट में कहा, 'आप को गुजरात के लोगों से अभूतपूर्व समर्थन मिल रहा है, इसके कारण सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) होश खो बैठी है। दिल्ली के बाद, उन्होंने गुजरात में भी छापेमारी शुरू कर दी है लेकिन दिल्ली की तरह उन्हें गुजरात में भी कुछ नहीं मिला है। नवरंगपुरा पुलिस थाना के निरीक्षक पी. के. पटेल ने इन दावों का खंडन करते हुए कहा कि ऐसी कोई छापेमारी नहीं की गई थी। पटेल ने सोमवार को को बताया कि छापे को लेकर गढ़वी के ट्वीट के बारे में जानकारी मिलने के बाद बाद मैं, व्यक्तिगत रूप से रविवार रात पार्टी कार्यालय गया और विवरण मांगा। लेकिन वहां मौजूद यज्ञेश नामक व्यक्ति सहित पार्टी नेताओं ने गढ़वी के दावे के मुताबिक कोई विवरण नहीं दिया कि कौन आया था और वास्तव में क्या हुआ।

मोदी ने ग्रेटर नोएडा में वर्ल्ड डेयरी समिट का किया उद्घाटन, 50 देशों के लगभग 1500 प्रतिभागी शामिल

नोएडा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज नोएडा में इंडिया एक्सपो मार्ट में आयोजित इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन वर्ल्ड डेयरी समिट 2022 का उद्घाटन किया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी उनके साथ मौजूद हैं। चार दिन चलने वाली डेयरी समिट में 50 देशों के लगभग 1500 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया है। पीएम के आने से पहले उनकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए है। साथ ही योगी सरकार ने उनके स्वागत की पूरी तैयारी कर ली है। उन्होंने अधिकारियों को भारतीय व विदेशी अतिथियों के आगमन को लेकर सुरक्षा व्यवस्था पर कड़ी नजर रखने के आदेश दिए है। बता दें कि ग्रेटर नोएडा में 4 दिवसीय विश्व डेयरी शिखर सम्मेलन 2022, 12 से 15 सितंबर तक आयोजित किया जा रहा है। जिसमें हिस्सा लेने के लिए 46 देशों के लगभग 1500 प्रतिभागी शामिल होने वाले है। इस सम्मेलन का उद्घाटन पीएम मोदी द्वारा किया जाएगा। जिसके लिए प्रधानमंत्री आज ग्रेटर नोएडा में पहुंचने वाले है। यहां वह सुबह 10:30 बजे वर्ल्ड डेयरी समिट 2022 का उद्घाटन करेंगे। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ग्रेटर नोएडा पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनका स्वागत करेंगे। जानकारी के मुताबिक, प्रधानमंत्री के आगमन से पहले रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधि ाकारियों के साथ बातचीत कर तैयारियों को परखा। उन्होंने अधिकारियों को भारतीय व विदेशी अतिथियों के आगमन को लेकर सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रखने के निर्देश दिए। 4 दिवसीय वर्ल्ड डेयरी समिट में 55 सत्र का आयोजन किया जाना है। यहां 46 देशों के प्रतिनिधि कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। विभिन्न सत्र में हिस्सा लेने के लिए 1500 से अधिक लोगों ने अपना पंजीकरण कराया है। डेयरी उद्योग से जुड़े 700 लोग इसमें शामिल है। वहीं कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से 500 से अधिक किसानों को भी आमंत्रित किया गया है।

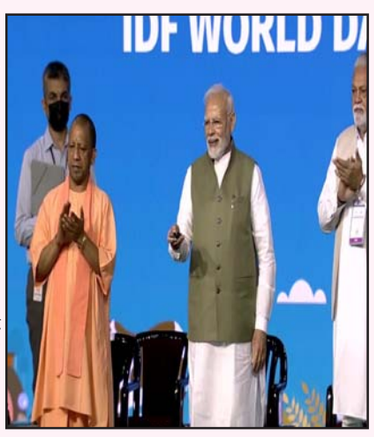

सम्पादकीय

टीबी का उन्मूलन

तपेदिक यानी टीबी एक गंभीर वैश्विक बीमारी है। अनुमान है कि दुनिया की एक–तिहाई आबादी टीबी के बैक्टिरिया से संक्रमित है, जिसमें केवल पांच से पंद्रह फीसदी लोग ही बीमार पड़ते हैं। शेष संक्रमितों को न तो टीबी की बीमारी होती है और न ही उनके जरिये यह संक्रमण दूसरों में फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 2020 में दुनियाभर में लगभग एक करोड़ लोग तपेदिक के शिकार हुए थे और 15 लाख लोगों की मौत हो गयी थी। साल 2019 में भारत में 24 लाख से अधिक मरीजों की तादाद दर्ज की गयी थी। इस हिसाब से देखें, तो भारत में टीबी के सर्वाधिक रोगी हैं। बीमार व्यक्ति से इसका संक्रमण फैलने का खतरा भी रहता है। इस बीमारी से मुक्ति के प्रयास वर्षों से हो रहे हैं।

इस क्रम में भारत सरकार ने एक विशेष कार्यक्रम 'प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान' की शुरुआत की है। इसके तहत 2025 तक देश को टीबी से पूरी तरह छुटकारा दिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस अभियान का शुभारंभ करते हुए इसमें शामिल होने के लिए पूरे देश का आह्वान किया है। उन्होंने कहा है कि जब जनहित में कोई कल्याणकारी योजना बनायी जाती है, तो उसकी सफलता की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। टीबी और इसके निदान से संबंधित जानकारी देने के लिए एक विशेष वेबसाइट 'नि–क्षय मित्र' बनायी गयी है। राष्ट्रपति मुर्मू ने निर्वाचित जन–प्रतिनिधियों, उद्योग जगत, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा नागरिकों से निवेदन किया है कि वे इस पहल में दान करें ताकि रोगियों को सफल उपचार मुहैया कराया जा सके। उल्लेखनीय है कि 2017 में एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार की गयी थी, जिसके तहत 2025 तक इस खतरनाक बीमारी से मुक्ति का लक्ष्य तय किया गया था। इस प्रयास में राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम को भी सशक्त बनाया गया है। अनेक दशकों की कोशिशों तथा हाल के वर्षों में अधिक ध्यान दिये जाने से इस मोर्चे पर लगातार उपलब्धियां हासिल हुई हैं।

सरकारी चिकित्सा केंद्रों पर टीबी का इलाज निशुल्क होता है। यह बीमारी असाध्य नहीं है और इसका उपचार संभव है। महामहिम राष्ट्रपति ने उचित ही रेखांकित किया है कि इसके बारे में अधिक जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। कई बार लोग टीबी के लक्षणों को सामान्य स्वास्थ्य समस्या मानकर उनकी अनदेखी कर देते हैं। ऐसे में संक्रमण के बढ़ने और फैलने का खतरा पैदा हो जाता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और आयुष्मान भारत जैसी अनेक पहलों से स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बनी नीतियों और योजनाओं के केंद्र में नागरिकों को रखने से इनका प्रभाव भी संतोषजनक है। आशा है कि हमारा देश कुछ वर्षों में तपेदिक के साये से बाहर निकल जायेगा।

राहुल का मैसेज-अच्छी टी शर्ट पहनना सबका अधिकार

जैसे बैट्समेन के स्टांस लेते ही, शफल करते ही, एक दो बाल खेलते ही समझ में आ जाता है कि आज वह फार्म में है लंबी इनिंग खेलेगा, वैसे ही यात्रा के पहले दिन से राहुल ने बता दिया कि यह इनिंग नाट आउट लंबी होने जा रही है। जाहिर है हंगामा तो मचना था। घबराहट तो फैलना थी और उस के परिणाम में घटिया और बेहूदा आरोप तो लगना थे।दिलचस्प है। आरोपों और हमलों का यह दौर अभी लंबा जाएगा। छह महीने से लंबी यात्रा है देश की आज तक की सबसे लंबी यात्रा। इससे पहले शायद दिग्विजय सिंह की नर्मदा यात्रा ही इतने दिनों की हुई है और भारी सफल। मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार का तख्ता पलट देने वाली यात्रा। तो राहुल की यात्रा भी जब तक चलेगी बौखलाहट का सिलसिला भी चलेगा। विघ्न, बाधाएं पैदा करने सारी कोशिशें होंगी। लेकिन राहुल के लिए अच्छा यह है कि इसमें नया कुछ नहीं है। ये बाजू हमारे आजमाए हुए हैं। 2004 से यही कर रहे हैं। राहुल पर तो पहले भी असर नहीं होता था। अब भी नहीं होता। राहुल निकल पड़े हैं। कभी–कभी और कभी–कभी क्या सच तो यह है कि अक्सर हमारे फिल्मी गीत जिन्दगी का सही तबसरा करते हैं। तो यह गाना अपने आप ही याद आ जाता है कि– अरे यह जो दिल है इसका आकलन तुम जूतों और टोपी से करोगे? टी शर्ट और सोने के लिए बनाए गए कंटेनर से! आजकल यही कंटेनर कंस्ट्रक्शन साइट पर होते हैं। वर्करों के सोने के लिए। करवट बदलने के साथ हिलते हैं। बरसात में बूंदों की आवाज ऐसी आती है कि आप सो नहीं सकते। टायलेट लीक करने लगते हैं। लोहे टिन के होते हैं तो दिन भर तपते हैं। एसी रात को कोई ज्यादा मदद नहीं कर पाते। उन कंटेनरों को जो मजबूरी में यूज किए जाते हैं वे लक्जीरियस बता रहे हैं? इन्हें अस्थायी कैम्पों के बारे में कुछ मालूम ही नहीं है। ये गोदी मीडिया वाले देश घूमे ही नहीं हैं। जंगल, पहाड़, नदियां, रेगिस्तान, गांव, खेत रुक कर देखे ही नहीं हैं। ये पोल्ट्री फार्म के चूजे हैं। खुली हवा में नहीं रहे। 1990 में जब आतंकवाद से लड़ने के लिए राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) बनी तो उसके जवानों के साथ जनरल भी टेन्टों में रहे। सुरक्षा बलों को कई जगह ऐसे अस्थायी अकमडेशन में रहना पड़ता है। उस समय भी प्रेस (उन दिनों मीडिया नहीं प्रेस कहा जाता था) में ऐसे लोग होते थे जो वहां सुविधाओं को गिनते थे, समस्याओं को नहीं देखते थे। मगर ऐसे नकारात्मक लोगों की संख्या कम होती थी। लेकिन आज तो वही वही लोग भरे हुए हैं। वे टी शर्ट की कीमत देख रहे हैं। जिसके ग्रेट ग्रैंड फादर, लकड़दादा पंडित मोतीलाल नेहरू ने उस समय करोड़ों की और आज अरबों का अपनी कोठी, आनंद भवन देश के नाम कर दी हो। जिसके परदादा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आजादी के बाद अपनी 98 प्रतिशत ध न संपत्ति देश को दे दी हो, जो उस समय करीब दो सौ करोड़ थी उससे उसकी टी शर्ट की कीमत पूछ रहे हो? नेहरू की किताबों की रायल्टी इतनी है कि राहुल चाहें तो दस लाख वाला सूट भी पहन सकते हैं। मगर उन्होंने जो टी शर्ट पहनी है वह उस रेंज की है भारत में सैकड़ों युवा उसे पहनते हैं।कांग्रेस द्वारा 1991 में अर्थव्यवस्था को खोलने और 2004 में उसे फिर गति देने के मकसद ही यह था कि हर आदमी अच्छा खाए पहने। और यह हुआ। गांव में भी लड़के–लड़कियां रेडिमेड जीन्स पहनने लगे। कोल्ड ड्रिंक, चिप्स वहां पहुंच गए। खासतौर से मनरेगा के बाद तो गांवों में आर्थिक क्रान्ति आ गई। राहुल यही तो कहते हैं कि लोगों की जेब में पैसा डालो, उन्हें काम दो अर्थव्यवस्था का पहिया घूमना फिर से शुरु हो जाएगा। आज रुक गया है। दो के अलावा किसी भी उद्योगपति से पूछ लो वे बताएंगे कि गांवों, छोटे शहरों में आम आदमी के उपयोग के लिए जो सामान जाता था उस सबकी बिक्री बंद हो गई है। लोगों के पास पैसा ही नहीं है। जब 1991 में नई अर्थव्यवस्था खोली थी तो गांवों में सबसे पहले ट्रेक्टर, मोटर साइकिलें पहुंचना शुरू हुईं थी। फिर फ्रिज गया। और 2004 के बाद एसी, वाशिंग मशीनें, कार पहुंचने लगीं। आज जाकर देखिए तो गांव का दुकानदार कहेगा कि टूथ ब्रश, पेस्ट, शेम्पू रखना अब बंद कर दिए हैं। कहां शेविंग क्रीम तक मिल जाता था हैरत है कि आज अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के बदले ऐसी बातें की जा रही हैं जैसी 70– 75 साल पहले की जाती थीं। उन दिनों रेडियो, अखबार, बाटा के जूते, पारकर का पेन, काटन के मद्रास से आए हुए रुमाल जैसी चीजों को लोग वैसे ही सवालिया निगाहों से देखते थे जैसे आज राहुल की शर्ट। देश ने बहुत तरक्की कर ली। दस लाख से ऊपर की कारें म ध यमवर्ग के पास हैं। इससे नीचे की गाड़ी अब लोग पसंद नहीं करते। हालांकि यह अलग बात है कि तेल डलवाना अब उनके लिए मुश्किल होता जा रहा है। बहस तो इस पर होना चाहिए कि जब कच्चे तेल का दाम कम हो रहा है तो हमारे यहां पेट्रोल डीजल की कीमतें क्यों बढ़ रही हैं? चावल की टुटी (टूटा हुआ चावल) तक महंगी हो रही है। उसके निर्यात पर प्रतिबंध लगाना पड़ रहा है। आटे पर पहले ही जीएसटी लग चुकी है। आटा महंगा, चावल महंगा और चर्चा करेंगे शर्ट की कीमत पर। करो! और राहुल आप इससे भी महंगी टी शर्ट पहनो। गांधी का मैसेज हो गया। तब उसकी जरूरत थी। कपास यहां से जाता था। कपड़ा वहां से बनकर आता था। उनका कपड़ा कम उपयोग करने के लिए गांधी ने लंगोटी लगा ली। मगर आज जरूरत आंबेडकर के संदेश की है। सूट में डॉ। आम्बेडकर की तस्वीर याद कीजिए। राहुल की तरह अपने पैसों का खरीद कर पहनते थे। मैसेज यह था कि देश का गरीब, दलित, पिछड़ा सब अच्छे कपड़े पहनें। कपड़ों के आधार पर कोई कमजोर, निर्धन नहीं दिखे।राहुल का संदेश इससे थोड़े से आगे का है। कांग्रेस ने नेहरू के समय से ही सरकारी नौकरियां देकर एक नया मध्यमवर्ग बनाया। 1991 में खुली अर्थव्यवस्था के तहत रोजगार के नए मौके मुहैया करवाकर उसका और विस्तार किया। और फिर 2004 में उसे गांव–गांव तक पहुंचा दिया। राहुल की न्याय योजना इससे आगे की थी। 2019 के चुनाव से पहले उन्होंने इसका ऐलान किया था। राहुल के शब्दों में गरीब के जेब तक पैसे पहुंचाना। देश के पांच करोड़ सबसे गरीब परिवारों की आर्थिक सहायता की यह योजना थी। दुनिया भर के अन्तरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने इसे मनरेगा की तरह ही क्रान्तिकारी योजना बताया था। जो गरीबों की आर्थिक स्थिति भी सुधारती और देश की भी। पैसा जब गरीब के पास पहुंचता है तो वह चलता है। घूमता है। मार्केट उसी से बनता है। वही गरीब का लड़का–लड़की जीन्स, टी शर्ट, टॉप पहनता है। उसमें स्मार्टनेस आती है। आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षा और पहनावे से ही वह दूसरों के मुकाबले खड़ा होता है।**–शकील अख्तर**

आज का राशिफल

मेष :– महत्वाकांक्षाएं मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कार्य में अत्याधिक व्यय का योग है। कार्यक्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी। परिवार में सुखद स्थिति प्रसन्नता लाएगी। रोजगार में लाभकारी स्थिति रहेगी।

वृषभ :– निकट संबंधों में शंकाओं को हावी न होने दें। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। नौकरी का वातावरण सुखद होगा। सगे–संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

मिथुन :– संबंधों में कटु वचनों का प्रयोग न करें। माता के स्वास्थ के प्रति सचेत रहें। अच्छे कायरे द्वारा प्रशंसा के पात्र बनेंगे। राजनीति से जुड़े लोगों को ग्रहों की अनुकूलता का लाभ मिलेगा।

कर्क :– बीती बातों को भूलने की कोशि करें। रोजगार में कुछ अच्छे अवसर मिलेंगे। भौतिक इच्छाएं बलवती होंगी। अभिभावकों के भावनात्मक सहयोग से उत्साह में वशद्धि होगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

सिंह :– नकारात्मक चिंताओं का त्याग करें। महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगी। वर्तमान में आपको सकारात्मक सोच के साथ सकारात्मक दिशा में प्रयास करना चाहिए।

कन्या :– किसी नये कार्य की ओर आपका रुझान बढ़े गा। किसी महत्वपूर्ण फैसले के लिए मन केंद्रित होगा। नवीन योजनाओं द्वारा प्रगति होगी। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।

तुला :– आवोश में किये गये कार्य से कष्ट संभव। भावनात्मक समस्याओं पर सगे–संबंधियों के बीच खुलकर बात करें। कुछ नये उत्साह व कार्य क्षमता की अनुभूति करेंगे। महत्वपूर्ण कायरें को कल पर न टालें।

वृश्चिक :– परिश्रम का समुचित लाभ प्राप्त होगा। पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा। महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। परिवार में किसी मेहमान का आगमन संभव।

धनु :– मन सुंदर कल्पनाओं से प्रभावित रहेगा। नये संबंधों के प्रति निकटता बढ़ेगी। उपस्थित साधनों में सन्तुष्ट व तश्प्त होने का प्रयत्न करें। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है।

मकर :– विभागीय परिवर्तनों से कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। अपने अन्दर धैर्य व वाणी में मधुरता लावें। कुछ नई अभिलाषाएं मन में जागश्त होंगी। प्रियजनों का सनिध्य प्राप्त होगा।

कुंभ :– राजनीति से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल रहेगा। अच्छे कायरे के लिए प्रशंसनीय होंगे। शासन–सत्ता से लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा।

मीन :– आर्थिक क्षेत्र में लाभ के आसार हैं। अवरोधित कार्य हल होंगे। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। विद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी।

फिर लौटेगा चीता

हमारे देश में चीते की वापसी की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है और भारत एक बार फिर से जमीन के सबसे तेज जानवर का स्वागत करने का बेताबी से इंतजार कर रहा है, जिसकी गुर्राहट कभी ऊंचे पहाड़ों और तटों के सिवाय समूचे देश के जंगलों में प्रतिवनित होती थी। चीते 17 सितंबर को भारत में वापस लौटेंगे। जल्दी ही चीता मध्य प्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान में विचरण कर रहा होगा। भारत में चीतों के न रहने के असंख्य कारण हैं, जिनमें पथ–निर्धारण, इनाम और शिकार के खेल के लिए बड़े पैमाने पर जानवरों को पकड़ना, पर्यावास में व्यापक बदलाव और उसके परिणामस्वरूप उनके शिकार के आधार का सिकुड़ना जैसे कारण शामिल हैं। ये सभी कारण मानव के व्यवहार से प्रेरित हैं, और ये सिर्फ एक बात– प्राकृतिक दुनिया पर मनुष्य के पूर्ण प्रभुत्व– का प्रतीक हैं। इसलिए जंगल में चीते की दोबारा वापसी एक पारिस्थितिकीय गलती को सुधारने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दुनिया को दिये गये 'मिशन लाइफ' मंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में उठाया गया एक कदम है। 'मिशन लाइफ का उद्देश्य वास्तव में एक ऐसी समावेशी दुनिया का निर्माण करना है, जहां मनुष्य का लालच हमारी वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के अस्तित्व की जरूरत को नहीं लांघता, अपितु जहां मनुष्य जीव–जंतुओं सहित प्रकृति के साथ सद्भाव से रहते हैं। विकास के पश्चिमी मॉडल ने इस धारणा को जन्म दिया कि मानव सर्वोच्च है और प्रौद्योगिकी की शक्ति से युक्त यह सर्वोच्च मानव हर उस चीज को हासिल कर सकता है, जिस पर वह अपना दावा करता है। जब इस मॉडल को व्यवहार में लाया गया, तो मानव कहीं खो गये और इसके साथ ही उनके द्वारा अस्थायी रूप से अर्जित की गयी समृद्धि की भावना भी गुम हो गयी। इस मॉडल ने न केवल अनेक प्रजातियों को खतरे में डाला, बल्कि पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। युगों से भारत में हम 'प्रकृति रक्षति रक्षिता' पर विश्ध्वास करते आये हैं। हमारी आजादी के बाद से देश ने केवल एक विशाल जंगली स्तनधारी को खोया है। हम अपनी आबादी के आकार और विकास संबंधी जरूरतों के बावजूद बाघ, शेर, एशियाई हाथी, घड़ियाल और एक सींग वाले गैंडे सहित कई महत्वपूर्ण प्रजातियों व उनके पारिस्थितिक तंत्रों को संरक्षित करने में सक्षम रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत प्रोजेक्ट टाइगर, प्रोजेक्ट लायन और प्रोजेक्ट एलीफेंट के साथ इन बेहद महत्वपूर्ण प्रजातियों की तादाद बढ़ाने में भी समर्थ रहा है। जहां एक ओर बाघ वन प्रणालियों की एक प्रमुख अग्रणी प्रजाति का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं चीता खुले जंगलों, घास के मैदानों और चारागाहों के शून्य को भर देगा। चीते की वापसी धरती के टिकाऊ पर्यावरण के निर्माण की दिशा में एक महत्वाकांक्षी कदम है, क्योंकि एक शीर्ष परभक्षी की वापसी ऐतिहासिक विकासवादी संतुलन को बहाल करती है, जो उनके पर्यावास की बहाली और शिकार के आधार के संरक्षण पर व्यापक प्रभाव डालती है। चीता उस विकासवादी स्वभाविक चयन प्रक्रिया का हिस्सा रहा है, जिसके कारण हिरण और चिंकारा जैसी प्रजातियों में उच्च गति से अनुकूलन हुआ है।चीते की वापसी लुप्तप्राय प्रजातियों और खुले वन पारिस्थितिकी तंत्र सहित उसके शिकार–आधार की सुरक्षा को सुनिश्चित करेगी, जो कुछ हिस्सों में विलुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी हैं। प्रोजेक्ट्ट चीता उपेक्षित पर्यावासों को बहाल करने के लिए संसाधन लायेगा, जिससे उनकी जैव विविधता का संरक्षण होगा, उनके पारिस्थितिकी तंत्र की सेवाओं और कार्बन को जब्त करने की उनकी अधिकतम क्षमता का उपयोग हो सकेगा। स्थानीय समुदाय को भी बड़े पैमाने पर लाभ होगा, क्योंकि चीते के लिए जिज्ञासा और सरोकारों के परिणामस्वरूप उत्पन्न पारिस्थितिक तंत्र से उनकी आजीविका के विकल्पों को बढ़ावा मिलेगा और उनके रहन–सहन की स्थिति में सुधार लाने में मदद मिलेगी। आज पूरी दुनिया विशाल मांसाहारी पशुओं और उनके पारिस्थितिकी तंत्रों को संरक्षित किये जाने की आवश्यकता के प्रति जागरूक हो चुकी है। विशाल मांसाहारी पशुओं की संख्या में हो रही गिरावट के क्रम को रोकने या उलटने के लिए दुनियाभर में उनके पुनरू प्रवेश और संरक्षणध स्थानांतरण का उपयोग किया जा रहा है। चूंकि ग्रह के संरक्षक के रूप में भारत अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने के अपने वादे को पूरा करने के लिए पूरे दिल से आगे बढ़ रहा है, इसलिए उसने भी चीते की वापसी का विकल्प चुना है, ताकि वह शीर्ष परभक्षी के रूप में चीते की वापसी के साथ उसके पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट का रुख पलट सके। यूं तो चीते की पुनरू वापसी कुनो में हो रही है, लेकिन उसकी तादाद में संभावित वृद्धि होने पर चीते को गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश सहित अन्य राज्यों में प्रवेश कराया जा सकता है। इससे वन्यजीवन के अन्य रूपों और संबद्ध पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के साथ–साथ भारत की खोयी हुई विरासत को पूरी तरह बहाल करने में मदद करेगी।**–भूपेंद्र यादव**

भारत जोड़ो यात्रा और भारत का विचार

भारत के सबसे पुराने राजनैतिक दल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, ने 7 सितम्बर से कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा शुरू की है। देश के 12 राज्यों और दो केन्द्र शासित प्रदेशों से गुजरते हुए यह यात्रा कुल 3,500 किलोमीटर की दूरी तय करेगी। भारत जोड़ो यात्रा एक राजनैतिक दल का उपक्रम है परन्तु करीब 200 सामाजिक कार्यकर्ताओं, जिनका चुनावी राजनीति से कोई प्रत्यक्ष लेना देना नहीं है, ने भी राहुल गांधी से मुलाकात की और ऐसी सम्भावना है कि वे और उनकी संस्थाएं इस यात्रा में सक्रिय भागीदारी करेंगी। जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता और स्वराज इंडिया के मुखिया योगेन्द्र यादव से सामाजिक संस्थाओं से यात्रा में भागीदारी करने की अपील की है। इस अपील में उन्होंने इस यात्रा की आवश्यकता का अत्यंत सारगर्भित वर्णन किया है। देश के वर्तमान निराशाजनक हालात का योगेन्द्र यादव ने अत्यंत सटीक वर्णन किया है। भाजपा जब अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पहली बार सत्ता में आई थी, उस समय कई सामाजिक कार्यकर्ताओं को लगता था कि कांग्रेस और भाजपा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जल्द ही उन्हें समझ आ गया कि भाजपा श्सबसे अलगश है। जिस दौर में भाजपा का अपने दम पर बहुमत नहीं था और वह एनडीए गठबंधन का नेतृत्व करती थी, उस समय भी वह दूसरों से श्अलगश थी। संघ परिवार के सदस्य बतौर वह हिंदुत्व के एजेंडे के प्रति प्रतिबद्ध थी। वह भारतीय राष्ट्रवाद के बरक्स हिन्दू राष्ट्रवाद की पैरोकार थी। उस दौर में उसने शिक्षा का भगवाकरण किया और आरएसएस की शाखाओं की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई। भाजपा का प्रत्यक्ष और परोक्ष अल्पसंख्यक–विरोधी रवैया सबके सामने था। मुसलमानों के अलावा, ईसाईयों के खिलाफ भी हिंसा हुई। सन् 1999 में पास्टर स्टेंस को बजरंग दल के दारा सिंह ने जिंदा जला दिया। इस भयावह कृत्य का उद्देश्य था उन लोगों को धमकाना जो प्रजातान्त्रिक मूल्यों के हामी थे। अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा, प्रजातान्त्रिक मूल्यों का हिस्सा है। कॉर्पोरेट संस्थाओं की बन आई थी और मीडिया की खरीद–फरोख्त शुरू हो गई थी। सन् 2014 में भाजपा ने अपने बल पर पूर्ण बहुमत हासिल कर लिया। एनडीए की भूमिका नाममात्र की रह गई और भाजपा–आरएसएस ने पूरे जोशोखरोश से अपना एजेंडा लागू करना शुरू कर दिया। प्रजातंत्र को बनाये रखने के लिए जो संस्थाएं निर्मित की गईं थीं उन्हें कमजोर किया गया और आरएसएस एवं उसके संगी–साथियों ने बड़ी होशियारी से दलितों, आदिवासियों और यहां तक कि अल्पसंख्यक वर्गों के एक तबके को भी अपने झंडे तले लाने में सफलता प्राप्त कर ली। वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य गरीबों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए अत्यन्त डरावना है। भारतीय संविधान के मूल्यों, विशेषकर बंधुत्व, को किनारे कर दिया गया है। एक बेहतर भारत के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध सामाजिक समूह प्रजातान्त्रिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करने और समाज के हाशियाकृत तबकों के उनके अधिकारों के लिए संघर्ष के लिए जमीन तैयार करने की कोशिशों में लगे हुए हैं। शायद इसलिए अनेक सामाजिक समूह भारत जोड़ो यात्रा से जुड़ना चाहते हैं। इस यात्रा का उद्देश्य बंधुत्व को बढ़ावा देना और आम लोगों की जिन्दगी की परेशानियों के प्रति समाज का ध यान आकर्षित करना है। आर्थिक असमानता बढ़ती ही जा रही है और समाज के एक बड़े तबके के नागरिक अधिकार केवल कागज पर रह गए हैं। बिलकिस बानो प्रकरण से पता चलता है कि समाज की सामूहिक सोच कितनी बदल गई है। भारत में यात्राओं ने सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की भूमिकाएं निभाईं हैं। महात्मा गांधी की दो यात्राओं ने पूरे समाज को बदल डाला था। दांडी यात्रा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष का एक महत्वपूर्ण अध्याय थी। इस यात्रा ने आजादी हासिल करने के भारत के संकल्प को मजबूत किया और सामाजिक सुधार और औपनिवेशिक शासन को उखाड़ फेंकने की इच्छा को बलवती किया। आश्चर्य नहीं कि सांप्रदायिक संगठन इस यात्रा से दूर रहे। इस यात्रा का आयोजन इस तरह से किया गया कि देश के नागरिक ध र्म और जाति की सीमाओं के ऊपर उठकर अपनी पहचान को भारतीय पहचान में समाहित करें। अम्बेडकर के महाड तालाब और कालाराम मंदिर आंदोलनों, जिनका उद्देश्य सामाजिक न्याय की स्थापना थी, के बाद गांध ीजी ने जाति और अछूत प्रथा के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। वे इस मामले में इतने गंभीर थे कि उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपने आन्दोलन को विराम देते हुए, 1933 के बाद से अनेक यात्राएं निकालीं। इनका उद्देश्य जातिगत पदक्रम और अछूत प्रथा का उन्मूलन था। इन यात्राओं से भी भारत को एक करने में मदद मिली। इनके अतिरिक्त जगन मोहन रेड्डी ने चुनावी लाभ के लिए, एनटीआर ने सत्ता हासिल करने के लिए और चंद्रशेखर ने मुख्यतरू भारत को एक करने के उद्देश्य से यात्राएं निकालीं। परन्तु जिस यात्रा ने भारत को सबसे ज्यादा विभाजित किया वह थी भाजपा के लालकृष्ण आडवाणी द्वारा निकाली गई रथयात्रा। इस यात्रा को मंडल आयोग की सिफारिशों को अमल में लाने के सरकार के निर्णय के परिप्रेक्ष्य में निकाला गया था। आडवाणी की यात्रा का एक लक्ष्य देश को धार्मिक आधार पर विभाजित करने भी था। इसके नतीजे में सांप्रदायिक हिंसा बढ़ी और अंततरू बाबरी मस्जिद को गिरा दिया गया। पिछले आठ वर्षों में विघटनकारी राजनीति का बोलबाला तेजी से बढ़ा है और देश की एकता और बंधुत्व के भाव पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यद्यपि भारत जोड़ो यात्रा एक राजनैतिक दल द्वारा निकाली जा रही है तथापि राष्ट्रीय एकता के व्यापक लक्ष्य को हासिल करने के लिए सामाजिक संगठन उससे जुड़ रहे हैं। यहां तक कि ऐसे संगठन भी इसका समर्थन कर रहे हैं जो कई मुद्दों पर कांग्रेस की राजनीति से सहमत नहीं है।**–राम पुनियानी**

धार्मिक कवच में रैपिस्ट

सोर्स– सरिता धर्म प्यार, सहयोग सिखाता है, यह में सुना जा सकता है। बंदूक रखने के संवैधानिक लगातार लगी है, धार्मिक जा रही हत्याओं के हो रही और उसे अमेरिका खुला समर्थन मिल रहा ऐसे हैं जो कहते हैं कि ईश्वर का है, जबकि समर्थन करते हैं कि उन रक्षा करने के लिए अस्त्र है और अब पिस्टल तो राइफल भी रखी जाए है। यह तब है जब वाले अकसर धर्मसभाओं औरतों, वृद्धों, अपाहिजों चलाते रहे हैं। 5 अगस्त, विस्कौन्सिन राज्य में गोरे सद्भावना, सदाचार, प्रचार हर तरह के प्रवचनों अमेरिका में गन लौबी जो अधिकार की रक्षा में स्थलों पर बंदूकों से की बावजूद टस से मस नहीं के तरहतरह के चर्चों का है। कुछ ही धर्मप्रचारक न्याय करने का काम ज्यादातर इस बात का की बाइबिल उन्हें धर्म की रखने की इजाजत देती क्या, अगर औटोमैटिक तो भी वह धर्म सम्मत बाइबिल में विश्वास रखने में निहत्थों, निर्दोषों, बच्चों, पर बेदर्दी से गोलियां 2012 को अमेरिका के कट्टरवादी ने सिख गुरुद्वारे पर बंदूकों से हमला कर 7 को मार दिया, 4 घायल हुए। 13 अगस्त, 2016 को न्यूयौर्क में एक इमाम को मसजिद के सामने मार डाला गया। 24 सितंबर, 2017 को अमेरिका के टैनिसी राज्य में एक चौनल में एक औरत को मारा गया, कई घायल हुए। पिट्ससबर्ग में 27 अक्तूबर, 2018 को यहूदियों के चर्च में 11 लोगों को एक गनमैन ने मार दिया। 27 अप्रैल, 2019 को 19 साला युवक ने यहूदी सिनागौड में एक को मारा। दिसंबर 2019 को एक युवक ने फ्रीवे चर्च में 2 को गोलियों से निशाना बना डाला। 2015 में अमेरिका के साउथ कैरोलिना में मैथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च में प्रेयर करने आए लोगों पर एक युवक ने 70 गोलियां चला डालीं जिस में 9 की मृत्यु हो गई। 2017 में बैप्टिस्ट चर्च के अंदर और बाहर जाते हुए भक्तों पर एक पूजापाठी गोरे युवा ने 700 गोलियां चला कर 26 को मार डाला, 20 को घायल किया। इस तरह के हर हादसे पर चर्च, गुरुद्वारे, मसजिद व सोचगौडा के प्रचारकों ने शांति की अपील की, सद्भाव की बात की पर किसी ने यह नहीं कहा कि इस तरह की हत्याओं के लिए ईश्वर दोषी है जिस ने अपने ही भक्तों को गोलियां चलाने वाली बंदूकें दीं। यह सब याद किया जा रहा है इसलिए कि जिन 15 लोगों को बिलकिस बानो के रेप व उस के बच्चों की हत्याओं के लिए बड़ी मुश्किल से आजीवन कैद की सजा अहमदाबाद के 2002 के दंगों के बाद मिली थी उन्हें इस अगस्त में छोड़ दिया गया और उन्हें छोड़ देने के बाद उन का भव्य स्वागत किया गया, लड्डू बांटे गए और भगवा समर्थक यह कहते नजर आए थे कि अपराधी संस्कारी हैं और 15 से 18 वर्ष की जेल के बाद छोडने पर कोई हानि नहीं हुई। जो फोटो प्रकाशित हुए उस से साफ लगता है कि इन का 15 साल जेल में अच्छाखासा खयाल रखा गया और सब ह्रष्टड्डपुष्ट थे। चेहरे चमक रहे थे। नतीजा यह है धर्म चाहे ईसाई हो, हिंदू हो, बौद्ध हो या इसलाम हिंसा का पाठ पढ़ाता है, हिंसा को समर्थन देता है। धर्म का घर में शांति लाने में कोई योगदान नहीं होता। दहेज हत्याओं के अकसर सजायाफ्ता दोषी खासे पूजापाठी होते हैं। लडके की चाह में कन्या भ्रूणहत्या करने वाले धार्मिक आदेशों के तहत पिंडदान करने के वास्ते लडके का जन्म देने को एक औरत को बारबार गर्भवती होने को मजबूर करते हैं और अगर लड़की पैदा हुई तो उसे मार तक देते हैं। धर्म आपस में शांति का पाठ पढ़ाता है, यह बिलकिस बानो के मामले ने एक बार फिर गलत साबित कर दिया है। 1947 के विभाजन के दौरान लाखों हत्याएं धर्म के कारण ही हुईं और आज तक परिवार उन का दर्द भोग रहे हैं। हिटलर ने धर्म के नाम पर यहूदियों को गैस चौंबरों में मारने के लिए बड़ेबड़े भवन बनवाए और लगभग 60 लाख निहत्थों, निर्दोषों को मार डाला। हिटलर के सारे अफसर अपने धर्म का कट्टर पालन करते थे। रूसी आज यूक्रेन में हत्याएं कर रहे हैं जबकि रूसी व यूक्रेनी दोनों और्थोडौक्स क्रिश्चियन हैं पर उन के मठ अलग हैं। ऐसे में फिर यह कैसा प्यार है जो धर्म सिखाता है।

देश का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राज्य यूपी : योगी

319 लाख टन सालाना होता है उत्पादन

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज सोमवार को कहा कि राज्य 319 लाख टन वार्षिक दूध उत्पादन के साथ देश के डेयरी उत्पादन में 16 प्रतिशत का योगदान देता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश देश का शीर्ष दूध उत्पादक राज्य है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने ग्रेटर नोएडा में अंतरराष्ट्रीय डेयरी संघ विश्व डेयरी सम्मेलन 2022 के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते हुए ये आंकड़े साझा किए। शिखर सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। यह सम्मेलन इससे पहले भारत में 1974 में आयोजित किया गया था। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा, जनसंख्या के मामले में उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है। दूध उत्पादन में भी शीर्ष पर है और देश के कुल उत्पादन में इसका 16 प्रतिशत हिस्सा है। आज उत्तर प्रदेश हर साल 319 लाख टन दूध उत्पादन करता है और दूध उत्पादन में शीर्ष पर है। इस मौके पर केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला, राज्यमंत्री संजीव बाल्यान, आईडीएफ

के अध्यक्ष पियरक्रिस्टियानो ब्रेजाले मौजूद थे। शिखर सम्मेलन का विषय पोषण एवं आजीविका के लिए डेयरी किसानों और पशुपालकों की आय पर केंद्रित है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा यह रोजगार सृजन और पोषण पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जो काफी प्रासंगिक मुद्दे हैं। पशुपालन में लगे ज्यादातर लोग इसे पारंपरिक व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं। योगी ने कहा कि इस व्यवसाय को प्रौद्योगिकी और आधुनिक दृष्टिकोण से जोड़कर पशुपालकों की आय को कई गुना बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा, पशुपालकों और किसानों के कारण उत्तर प्रदेश और भारत शीर्ष दूध उत्पादक बन गए हैं। प्रदेश में आज संगठित क्षेत्र में 110 डेयरी काम कर रही हैं और इसमें सहकारी क्षेत्र की डेयरियां भी शामिल है। प्रदेश में 8,600 दुग्ध समितियां भी हैं, जिनके जरिये दूध उत्पादन में लगे चार लाख से अधिक सदस्य सक्रिय हैं। उत्तर प्रदेश में नए ग्रीनफील्ड डेयरी संयंत्र शुरू करने के लिए काम तेजी से चल रहा है। ये संयंत्र अगले एक से दो साल में चालू हो जाएंगे। मैं राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड से उत्तर प्रदेश को मदद देने और अवसरों का लाभ उठाने का अनुरोध करूंगा। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर 41,000 से अधिक सदस्यों वाले महिला स्वयं सहायता समूह एसएचजी बालिनी दुग्ध उत्पादक कंपनी की तारीफ की, जो बुंदेलखंड क्षेत्र के छह जिलों के 795 गांवों से प्रतिदिन 1.35 लाख लीटर दूध का संग्रह करती है। बालिनी की स्थापना 2019 में झांसी में हुई थी। उन्होंने कहा, महिलाओं के नेतृत्व वाले इस एसएचजी का वार्षिक कारोबार 150 करोड़ रुपये से अधिक है और शुद्ध लाभ 13 करोड़ रुपये है। बालिनी दुग्ध उत्पादक, उत्तर प्रदेश जैसे राज्य के लिए अनुकरणीय मॉडल है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी ही चार और दुग्ध उत्पादक संस्थाओं की स्थापना करने के लिए काम चल रहा है। राज्य सरकार अगले पांच वर्षों के दौरान नंद बाबा दूध मिशन के तहत राज्य में निवेश करेगी।

खुदरा में तीन गुना महंगी बिक रही सब्जियां

लखनऊ। थोक मंडी में 25 रुपए किलो बिकने वाली हरी मिर्च लोकल बाजार में 60 और 35 रुपए किलो वाला शिमला मिर्च 80 रुपए किलो बिक रही है। होल सेल से लोकर में आने के बाद सब्जियों के रेट ढ़ाई से तीन गुना ज्यादा बढ़ रहे है। हालाकि कद्दू, लौकी समेत कई सब्जियां लोकल में थोड़ी सस्ती हुई है। दुबग्गा मंडी कारोबारी मुकेश सोनकर का कहना है कि मौजूदा समय बारिश की वजह से सब्जियों की क्वालिटी बहुत अच्छी नहीं आ रही है। जो सब्जियां पहले चार से पांच दिन तक चलती थी अब वह दो से तीन दिन में खराब होने लगी है।

अच्छी क्वालिटी का आलू 30 रुपए तक मिल रहा है। जबकि बाजार में यह 15 रुपए से शुरू है। दुबग्गा गल्ला मंडी के कारोबारी शाहनवाज आलम ने बताया, दूसरे राज्यों से जो माल कम आता था, अब उसकी समस्या भी कम हो गई है। डिमांड और सप्लाई का समीकरण फिर भी ठीक नहीं है। अब सप्लाई पर्याप्त है लेकिन उसके हिसाब से डिमांड बिल्कुल नहीं है। उन्होंने बताया कि बारिश ज्यादा होने से भी पैदावार पर असर पड़ता है। ऐसे नवंबर तक सब्जियां फिर से महंगी हो सकती है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कर-करेत्तर की समीक्षा बैठक सम्पन्न

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में कर–करेत्तर की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने राजस्व विभागों के विभागवार राजस्व वसूली की प्रगति की समीक्षा करते हुए वाणिज्यकर विभाग के राजस्व वसूली की प्रगति लक्ष्य के सापेक्ष कम पाये जाने पर संयुक्त आयुक्त वाणिज्यकर एवं नगरीय वितरण विद्युत नैनी के अधिशाषी अभियंता से स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। उन्होंने राजस्व वसूली की प्रगति ठीक न पाये जान पर सम्बंधित अधिकारियों को कड़ी चेतावनी देते हुए राजस्व की वसूली में तेजी लाये जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने परिवहन विभाग की समीक्षा करते हुए एआरटीओ प्रशासन से लक्ष्य के सापेक्ष शत–प्रतिशत राजस्व की वसूली सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने परिवहन, वाणिज्य एवं आबकारी विभाग के अधिकारियों को प्रवर्तन की कार्रवाई में तेजी लाते हुए लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया

है साथ ही साथ उन्होंने आर0सी0 पर भी प्रभावी कार्रवाई करते हुए वसूली सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। विद्युत विभाग की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने शत–प्रतिशत विद्युत बकाये की वसूली सुनिश्चित करने के लिए कहा है। नगर पंचायत की समीक्षा करते हुए सभी अधिशाषी अधिकारियों का लक्ष्य निर्धारित कर वसूली का निर्देश दिया है। उन्होंने सभी मण्डी सचिवों को निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष वसूली सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने कहा कि कार्यों में लापरवाही या उदासीनता कत्तई क्षम्य नहीं होगा। इस अवसर पर एडीएम वित्त एवं राजस्व श्री जगदम्बा सिंह सहित सभी अपर जिलाधिकारीगण एवं उपजिलाधिकारीगण सहित सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरे

आर्थोपेडिक सर्जरी या फ्रैक्चर के बाद महत्वपूर्ण है फिजियोथेरेपी

लखनऊ। आर्थोपेडिक सर्जरी या कॉलर बोन के फ्रैक्चर, हेयरलाइन फ्रैक्चर, पैर फ्रैक्चर, हाथ फ्रैक्चर और हड्डी फ्रैक्चर के बाद भौतिक चिकित्सा या फिजियोथेरेपी की लगभग हमेशा आवश्यकता होती है। हालांकि, इसके बारे में जागरूकता और फिजियोथेरेपी सेंटर उपलब्ध न होने के कारण रोगियों द्वारा इसे आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है। रीजेंसी सुपर–स्पेशियलिटी अस्पताल, लखनऊ के हड्डी रोग विशेषज्ञों ने कहा है कि वे पोस्ट–ऑपरेटिव प्रक्रियाओं की उपेक्षा न करें, इससे उन्हें न केवल रोगी की ताकत वापस लाने और वापस से चलने फिरने में मदद मिलती है।

डॉ रोहित जैन, कंसलटेंट–ऑर्थोपेडिक्स, स्पोर्ट्स मेडिसिन एंड जॉइंट रिप्लेसमेंट, रीजेंसी सुपर–स्पेशियलिटी अस्पताल, लखनऊ ने कहा, ष्फिजियोथेरेपी फ्रैक्चर और सर्जरी के प्रकार के आधार पर भिन्न होती है। लेकिन सामान्य तौर पर, थेरेपी तब शुरू होती है जब कास्ट हटा दिया जाता है। फिजियोथेरेपी के लिए आमतौर पर तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक कि हड्डी ठीक न हो जाए। पुनर्वास तकनीक रोगी को आघात से बाहर आने और उनके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में भी मदद करती है।

चौक में लगा भीषण जाम, मशक्कत करते रहे ट्रैफिक पुलिस कर्मी

लखनऊ। चौक चौराहे पर सोमवार को भीषण जाम लग गया। ट्रैफिक पुलिस कर्मी काफी देर तक ट्रैफिक काबू करने के लिए मशक्कत करते रहे। आखिरकार सिग्नल लाइट की लाल–हरी बत्तियां बंद की गईं। एलर्ट मोड वाली पीली लाइट चालू की गई तब जाकर जाम से राहत मिली। इसके पूर्व ट्रैफिक लाइट लाल होने पर दोपहर 12 बजे वाहनों की लंबी कतारें लग गई। जिसे देखते हुए ट्रैफिक सिग्नल की लाइट को पीला करके रास्ता खाली कराया गया। इस दौरान भीषण गर्मी के चलते वाहन सवार ही नहीं पैदल यात्री भी जाम में फंसकर परेशान होते नजर आए।

चौराहे पर पीली लाइट होने के आधे घंटे बाद ट्रैफिक सामान्य हो सका। वहीं, लखनऊ की कमिश्नर ने ऐसी समस्याओं को देखते हुए चौराहों का सर्वेक्षण करने का निर्देश दिया हुआ है। यह देखने के लिए कि कहीं पर सिग्नल ही तो जाम का सबब नहीं बन रहे हैं।

महंत भवनाथ महाराज की तबीयत में पहले से सुधार

लखनऊ। मेदांता अस्पताल में भर्ती हनुमान गढ़ी के महंत भवनाथ महाराज की तबीयत में पहले से सुधार है। डॉक्टरों ने महंत के पेशाब में रुकावट के चलते प्रोस्टेट का ऑपरेशन किया है। आईसीयू में भर्ती महंत का इलाज यूरोलॉजी विभाग के डॉक्टरों की निगरानी में चल रहा है। महन्त की तबीयत बिगड़ने पर मेदान्ता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सपा प्रमुख व पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने रविवार को अस्पताल पहुंचकर महंत भवनाथ दास महाराज का कुशल क्षेम लिया था। मेदांता अस्पताल के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. राकेश कपूर ने बताया कि महंत के प्रोस्टेट का सफल ऑपरेशन किया गया है। अब उनकी सेहत में सुधार हो रहा है।

नेपाल एवं भारत का पारस्परिक सम्बन्ध आज भी मधुर है : धर्मवीर प्रजापति

लखनऊ। उप्र के कारागार एवं होमगार्डस राज्यमंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) धर्मवीर प्रजापति ने कृष्णचन्द्र नेपाली पोखरेल, मुख्यमंत्री मंड़की प्रदेश पोखरा, एवं खगराज अधिकारी, पूर्व गश्हमंत्री नेपाल से शिष्टाचार भेंट कर भगवद् गीता की एक प्रति भेंट की। श्री प्रजापति ने कहा कि भारत एवं नेपाल का आपसी सम्बन्ध हजारो वर्षो से रहा है। दोनो देशों की संस्कृति एवं सभ्यता अति प्राचीन हैं। साय ही नेपाल हमारा मित्र देश है। भारत नेपाल दोनो देशों का आपसी मधुर संबंध होना भी विदेश नीति के तहत जरूरी है। इसके पूर्व उन्होंने नेपाल की राजधानी काठामाण्डू स्थित आदि शक्ति मा0 गुहेश्वरी का दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

ट्रांसजेण्डर कल्याण बोर्ड उ0प्र0 की दूसरी बैठक आज

लखनऊ। समाज कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरूण की अध्यक्षता में ट्रांस जेण्डर समुदाय से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श करने हेतु कल पूर्वाह्न 11:30 बजे से बापू भवन, द्वितीय तल स्थित सभाकक्ष में ट्रांसजेण्डर कल्याण बोर्ड उ0प्र0 की बैठक आहूत की गई है। यह जानकारी निदेशक समाज कल्याण राकेश कुमार ने आज यहां देते हुए बताया कि बैठक में ट्रांस जेण्डर कल्याण बोर्ड की उपाध्यक्ष सोनम चिश्ती सहित समस्त सदस्य भाग लेगें। श्री कुमार ने बताया कि बैठक में भाग लेने वाले सभी लोगों से आवश्यक सूचना सहित उपस्थित होने के लिए कहा गया है।

उत्तरीय मजदूर यूनियन के कार्यकारी अध्यक्ष बने पीयूष निगम

लखनऊ। उत्तर रेलवे के उत्तरीय रेलवे मजदूर यूनियन के महामंत्री बीसी शर्मा ने कार्यकारी अध्यक्ष पद पर पीयूष निगम को नियुक्त किया है। डीआरएम कार्यालय की शाखा का पुनर्गठन करते हुए अध्यक्ष पद पर संजय मिश्रा, उपाध्यक्ष पद पर शैलेंद्र श्रीवास्तव व राम कुमार, सचिव पद पर रमन उप्पल, सहायक शाखा सचिव सविता मल्होत्रा व अर्जुन अवस्थी, संगठन मंत्री महजबीन आलम और कोषाध्यक्ष पद पर पांचू राम को नियुक्त किया।

मोदी के नाम पर कमल के फूल से लबालब हो जाती ईवीएम : केशव

प्रयाग दर्पण संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पिछले दिनों कहा था कि अगर केशव प्रसाद मौर्या में हिम्मत है और 100 विधायक उनके साथ हैं तो आ जाएं हम उनका समर्थन कर देंगे और सीएम बना देंगे। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या के बीच अक्सर तकरार देखने को मिलती है। विधानसभा में भी दोनों के बीच जुबानी जंग हुई थी। सोशल मीडिया पर भी दोनों एक दूसरे पर अक्सर कटाक्ष करते रहते हैं। ऐसे में जब अखिलेश यादव ने केशव प्रसाद मौर्या को सीएम बनाने का ऑफर दिया तो पूरी भाजपा एक साथ अखिलेश यादव पर हमलावर हो गई। अखिलेश यादव के इस ऑफर पर डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने कहा था कि वो अपने 100 विधायकों को बचाएं वो भाजपा में आने

के लिए आतुर हैं। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या से अखिलेश के ऑफर पर सवाल पूछा गया कि क्या आपके पास 100 विधायकों का समर्थन है? इस पर उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव अपने 100 विधायक बचाएं, वो सभी भाजपा में आने के लिए तैयार हैं। हमारे विधायक उनके साथ कभी नहीं मिलेंगे। समाजवादी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी का स्वभाविक गठबंधन कभी हो ही नहीं सकता है। उनके ऑफर को मैं ठुकरा रहा हूं। हम सपा के 100 विधायक ला सकते हैं लेकिन लाएंगे नहीं क्योंकि हमारे यहां गुंडों की जरूरत नहीं है। हमारे यहां शरीफ लोग चाहिए जो जनता की सेवा करें। मुख्यमंत्री बनने की इच्छा पर केशव प्रसाद मौर्या ने कहा कि मुख्यमंत्री बनना या न बनना, बनाना या न बनाना पार्टी नेतृत्व की तरफ से फैसला लिया जाता है। केशव प्रसाद मौर्या से पूछा गया कि आपके पार्टी अध्यक्ष रहते हुए जबरदस्त जीत हुई लेकिन इनाम किसी और को मिल गया ? इस पर उन्होंने कहा कि अध्यक्ष रहते हुए पार्टी की जीत हुई, ये मेरी विजय नहीं है। वो तो मोदी जी का क्रेज है देश में कि उनके नाम पर कमल के फूल से ईवीएम लबालब हो जाती है।

गिराया गया सरकारी जमीन पर बना मदरसा

लखनऊ। जनपद अमेठी की गौरीगंज तहसील क्षेत्र में अवैध कब्जे को लेकर बड़ी कार्रवाई करते हुए रायबरेली सुलतानपुर मार्ग पर गुजरटोला गांव के पास बने मदरसे के ढांचे को सोमवार को गिरा दिया गया। प्रशासनिक सूत्रों के मुताबिक सड़क के किनारे सरकारी चारागाह की जमीन पर यह अवैध मदरसा बनाया गया था, जिसे लेकर तहसील दार गौरीगंज ने इसे गिराने का आदेश जारी किया था। मदरसा मालिक हसन पुत्र सुलतान पर दो लाख 24 हजार का जुर्माना भी लगाया गया है। मदरसे पर बुलडोजर चलाये जाने के समय उपजिलाधिकारी गौरीगंज, क्षेत्राधिकारी गौरीगंज समेत पांच थानों से पुलिसकर्मी मौजूद थे। अमेठी के जिलाधिकारी राकेश कुमार मिश्र ने बताया कि बांदा टांडा राजमार्ग के किनारे 2009 से चारागाह की महंगी सरकारी जमीन पर अवैध रूप से मदरसा बनाया गया था पिछले दो साल से मदरसा बंद था।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में रेडक्रास सोसायटी की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में रेडक्रास सोसायटी की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने क्षयरोग से ग्रसित बच्चों को गोद लिए जाने के बारे में जानकारी ली तथा 17 सितम्बर को एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर(मेगा ब्लड डोनेशन कैम्प) का आयोजन कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि शहर में एक स्थान पर एवं गंगापार एवं यमुनापार में कराये जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ स्वयं सहायता समूह, नर्सिंग होम एसोसिएशन की तरफ से भी एक कैम्प लगेगा। पुलिस लाइन, युनाइटेड, आई0एम0ए0 सहित मेगा ब्लड कैम्प का आयोजन किया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति अपना ब्लड डोनेट कर सकते है साथ ही रेडक्रास सोसायटी के द्वारा एक एटीएम हेल्थ लगाया जायेगा, जिसमें 40 तरह की निःशुल्क जांच की सुविधा रहेगी साथ ही साथ एटीएम हेल्थ के द्वारा ही दवाईयां भी प्राप्त की जा सकेगी। यह आमजनमानस के लिए बहुत की लाभकारी होगा। इसके अलावा स्वयं सेवी संस्थाओं, कार्यदायी संस्थाओं के द्वारा भी हेल्थ एटीएम लगाया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी श्री नानक शरण, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी श्री ए0के0 तिवारी, ब्लाक प्रमुख कौंधियारा श्री इन्द्रनाथ मिश्र सदस्य एवं नागेन्द्र पाण्डेय सदस्य सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

वापस मिलेगा शिक्षकों का कटा वेतन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग की रोक के बावजूद यूपी के शिक्षकों और शिक्षकों की सैलरी से पिछले 8 सालों से गलत ढंग से धनराशि की कटौती की जा रही है, जो अब वापस की जाएगी। विभाग ने शिक्षकों व कर्मचारियों की डिटेल्स जुटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, जिनके वेतन से पैसा काटा जा रहा था। पिछले 8 साल से गलत ढंग से काटी जा रही धनराशि वापस की जाएगी। विभाग ने शिक्षकों व कर्मचारियों की डिटेल्स जुटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, जिनके खातों से सामूहिक बीमा योजना के तहत पैसा काटा जा रहा था। विभाग ने रोक भी लगा दी थी इसके बावजूद एलआईसी बीमा योजना सामूहिक के नाम पर वेतन से 87 रुपये काटे जा रहे थे। अब विभाग ने कार्रवाई करते हुए 3 लाख शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन से काटे गए पैसे वापस करने की कवायद शुरू कर दी। शिक्षा विभाग के मुताबिक 2014 के बाद नियुक्त शिक्षकों व कर्मचारियों के लिए एलआईसी की सामूहिक विवाह योजना बंद कर दी गई थी, जो 2014 से पहले नियुक्त हुए शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए की जा रही थी। इस योजना में सेवाकाल में अगर किसी की मृत्यु हो जाती थी तो मृतक आश्रित को 1 लाख रुपये व कुल जमा धनराशि दी जाती थी। अगर रिटायरमेंट के बाद जितनी भी कुल जमा राशि थी उसका 50 फीसदी लौटा दिया जाता था लेकिन 2014 के बाद वालों की कटौती का लाभ नहीं दिया जाता था। इसके बावजूद 2014 के बाद लगातार कर्मचारियों और शिक्षकों के वेतन से कटौती की जा रही थी। यह कटौती सिर्फ केवल उन्हीं शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन से थी जिनकी नियुक्ति 30 मार्च 2014 से पहले हुई थी।

पुरातत्व एवं हमारी धरोहर विषय पर 19 से 28 सितम्बर तक व्याख्यानमाला का आयोजन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के अधीन राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं में पुरातत्व एवं हमारी धरोहर के सम्बन्ध में पुरातत्व अभिरूचि व्याख्यान पावर प्वाइंट के माध्यम से दिये जा रहे हैं। इसके अलावा आगामी 19 से 28 सितम्बर, 2022 के मध्य पुरातत्व अभिरूचि पाठ्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

संस्कृति विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार संस्कृति विभाग द्वारा विभिन्न अवसरों पर कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इसके तहत मगहर में नवनिर्मित संतकबीर अकादमी के विभिन्न भवनों का लोकार्पण मा0 तात्कालीन राष्ट्रपति द्वारा 02 जून 2022 को किया गया।

मंडल आयुक्त की अध्यक्षता में मंडलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक संपन्न हुई।

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। मंडल आयुक्त श्री विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में मंडलीय उद्योग बंधु समिति की बैठक कार्यालय स्थित गांधी सभागार में संपन्न हुई जिसमें उद्योग बंधुओं से संबंधित समस्याओं की बिंदुवार समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। सर्वप्रथम निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त प्रकरणों के निस्तारण संबंधित विवरण की अद्यतन स्थिति के बारे में जानकारी लेते हुए मंडल आयुक्त ने सभी विचाराधीन प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। अभी तक पोर्टल पर 6774 प्रकरण प्राप्त हुए हैं जिनमें से 6214 का निस्तारण कर दिया गया है। शेष विभिन्न विभागों एवं उद्यमियों के स्तर पर लंबित हैं जिनके शीघ्र निस्तारण हेतु मंडल आयुक्त द्वारा यह निर्देश दिए गए हैं।बैठक में शासन

द्वारा संचालित रोजगार परक योजनाओं, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम एवं एक जनपद एक उत्पाद योजना की समीक्षा भी की गई जिसमें वित्तीय वर्ष 2022–23 में निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष अभी तक कितना ऋण स्वीकृत एवं वितरित किया जा चुका है उसके बारे में भी चर्चा की गई। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत 346 के लक्ष्य के सापेक्ष 176 आवेदनों को स्वीकृति दी जा चुकी है जिसमें से 118 को ऋण भी दिया जा चुका है। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के अंतर्गत 363 के लक्ष्य के सापेक्ष 125 को स्वीकृति एवं 80 को ऋण वितरित किया जा चुका है।

महाकुम्भ-2025 के दृष्टिगत झूंसी, नैनी तथा फाफामऊ में 100 बेड़ का अस्पताल बनाये जाने हेतु प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत करने के दिए निर्देश

प्रयाग दर्पण संवाददाता

प्रयागराज। मा0 उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को मेला प्राधिकरण स्थित आईसीसीसी सभागार में महाकुम्भ–2025 को दिव्य एवं भव्य रूप से आयोजित किए जाने हेतु सम्बंधित विभागों के द्वारा की जा रही तैयारियों के सम्बंध में समीक्षा बैठक की। मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने एयरपोर्ट से जोड़ने वाली फोरलेन सड़क के निर्माण कार्य को जल्द से जल्द शुरू कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने सिविल एयरपोर्ट को अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाये जाने के सम्बंध में कार्ययोजना बनाकर प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए कहा है। मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने विभागों एवं कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारियों से कहा कि जो भी परियोजनाएं प्रस्तावित है, उनकी ऐसी कार्ययोजना बनाकर कार्य कराया जाये कि वह महाकुम्भ–2025 से पूर्व ही पूर्ण हो जाये। उन्होंने सभी योजनाध्परियोजनाओं की कार्ययोजना बनाते समय प्रयागराज की भविष्य की जरूरतों को भी ध्यान में रखे जाने के लिए कहा है। मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने महाकुम्भ–2025

के दृष्टिगत प्रयागराज के चारों ओर लगभग 80 किमी0 तक के क्षेत्र में सड़कों के चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण के कार्य को कराये जाने हेतु प्रस्ताव बनाये जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ उन्होंने शहर के अंदर की सड़कों, गलियों तथा जल निकासी की समुचित व्यवस्था हेतु प्रस्ताव बनाये जाने के लिए कहा है। कुम्भ से सम्बंधित कार्यों में मा0 जनप्रतिनिधियों से उनकी राय ली जाये तथा जो भी प्लान तैयार करें, उससे मा0 जनप्रतिनिधियों को भी अवगत करायें। उन्होंने जसरा में बनाये जाने वाले आरओबी के निर्माण में हो रही देरी पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कार्य को जल्द से जल्द शुरू कराने के निर्देश दिए है। सेतु निगम के द्वारा कराये जाने वाले कार्यों में चौफटका में बनने वाले ओवरब्रिज, सलोरी के पास बनने वाले ओवरब्रिज सहित अन्य ओवरब्रिजों के कार्यों को बिना किसी विलम्ब के पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने रिंग रोड़ एवं रामवन गमन मार्ग के कार्यों को भी शीर्ष प्राथमिकता पर कराये जाने का निर्देश दिया है। मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने निरंजन डाट पुल से पानी की टंकी के पास बने हुए रेलवे ओवरब्रिज के बीच में कोई उचित स्थान चिन्हित करते हुए एक और रेलवे ओवरब्रिज बनाये जाने हेतु प्रस्ताव बनाये जाने के लिए कहा है।मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने नमामि गंगे के द्वारा सीवरेज निस्तारण कार्यक्रम के तहत शत–प्रतिशत नालों की टैपिंग कर उसके सीवर लाइन को एसटीपी से अनिवार्य रूप से जोड़े जाने हेतु शीर्ष प्राथमिकता पर कार्रवाई किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने फाफामऊ, नैनी एवं झूंसी में बने एस0टी0पी0 के निर्माण कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया हैं।

मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने महाकुम्भ–2025 के दृष्टिगत झूंसी, नैनी तथा फाफामऊ में 100 बेड़ का अस्पताल बनाये जाने हेतु प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। उन्होंने नगर निगम सीमा क्षेत्र के विस्तारित हुए क्षेत्रों में भी विकास कार्य से सम्बंधित प्रस्ताव बनाये जाने के लिए कहा है। पर्यटन विभाग के द्वारा कराये जाने वाले कार्यों की समीक्षा करते हुए मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने अक्षयवट, नागवासुकी मंदिर, दशाश्वमेध घाट, अलोप शंकरी देवी, ललिता देवी तथा बारह माधव मार्ग के विकास एवं सौन्दर्यीकरण हेतु प्रस्ताव बनाकर कार्रवाई किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने बारह माधव सर्किट मार्ग पर यात्री सुविधा केन्द्र, पीने के पानी, शौचालय सहित अन्य सुविधाएं भी बेहतर ढंग से सुनिश्चित किए जाने हेतु आवश्यक कार्रवाई किए जाने के लिए कहा है।

विभिन्न अभिकरणों की समीक्षा बैठक

लखनऊ। प्रमुख सचिव, आवास एवं शहरी नियोजन विभाग, नितिन रमेश गोकर्ण की अध्यक्षता में 14 सितम्बर को पूर्वान्ह 11:00 बजे आवास एवं शहरी नियोजन विभाग के नियन्त्रणाधीन विभिन्न अभिकरणों के विभागाध्यक्षों एवं सूडा के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया है।

बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के कियान्वयन एवं सूडा से समन्वय से संबंधित बिन्दुओं पर विचार किया जायेगा जिसके अन्तर्गत पंजीकरण से प्राप्त लाभार्थियों की सूची के सत्यापनध्परीक्षण, आवंटन प्रक्रिया में सफल लाभार्थियों के विवरण को एम.आई.एस. पोर्टल पर अपलोड किये जाने, परियोजनाओं में उपयोगिता प्रमाण पत्र उपलब्ध कराने, योजनान्तर्गत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय किश्त की धनराशि निर्गत किये जाने की प्रगति के साथ ही निर्माणाधीन परियोजनाओं में अनारम्भ भवनों तथा सीएसएमसी से स्वीकृत ऐसी परियोजनाएं, जिनमें निर्माण कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है, में निर्माण कार्य प्रारम्भ न होने के कारणों की समीक्षा की जायेगी।

वैज्ञानिक सोच विकसित कर समस्याओं से निदान राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। बच्चों में वैज्ञानिक सोच विकसित करके अपने आस पास के परिवेश से जुड़ी छोटी छोटी समस्याओं के निदान की ओर अग्रसर करना ही राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य है। स्वयं समस्या से समाधान की ओर वैज्ञानिक कार्यविधि के साथ चरण बद्ध ढंग से बढ़ना विद्यार्थियों को विज्ञान से सहज ढंग से जोड़ता है। यह बात देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ चन्द्र मोहन नौटियाल ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की जनपद स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में ऑनलाइन जुड़ कर व्यक्त किये। इसके पूर्व इस कार्यशाला का उद्घाटन जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी त्रिपाठी ने सरस्वती माता के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया।

जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि चिल्ड्रेन साइंस कांग्रेस का मुख्य विषय भी कहीं न कहीं सतत विकास की अवधारणा से जुड़ा है। विकास के लिए प्रकृति से हम जो कुछ भी लेते हैं, उसको हम किसी भी रूप में वापस भी करें तभी सतत विकास की बात हम कर सकते

हैं। विज्ञान से जुड़े तथ्यों को रोचक ढंग से बताकर श्री त्रिपाठी ने कार्यशाला में महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की। कार्यक्रम में जिला समन्वयक अजय कुमार मिश्र ने राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के सम्बंध में विस्तृत परिचय देते हुए इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। अम्बेडकर से निरंजन लाल ने इस वर्ष के मुख्य विषय स्वास्थ्य एवम कल्याण के लिए पारितन्त्र को समझना पर प्रोजेक्ट तैयार करने सम्बन्धी जानकारी प्रदान की। रसायन विज्ञान प्रवक्ता ताजुद्दीन खान ने अपने पारितन्त्र को समझना और स्वास्थ्य, पोषण एवम कल्याण को प्रोत्साहन देना उप विषयो पर प्रोजेक्ट से जुड़ी जानकारियां प्रदान की। जिला विज्ञान क्लब समन्वयक एवं एकेडमिक कोऑर्डिनेटर आशीष पाठक ने कार्यक्रम का संचालन किया और पारितन्त्र और स्वास्थ्य के लिए तकनीकी नवाचार, पारितन्त्र और स्वास्थ्य के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाएं उप विषयों पर प्रोजेक्ट बनाने के शीर्षकों की जानकारी दी। इस कार्यशाला में बेसिक शिक्षा विभाग से जिला समन्वयक प्रशिक्षण श्रीमती विनीता मिश्रा, रामनगर पीजी कालेज के पूर्व प्राचार्य नरेश चन्द्र त्रिपाठी ने ऑनलाइन कार्यक्रम की होस्टिंग की।

राज्य शिक्षक पुरस्कार विजेता शिक्षक दिनेश वर्मा, अरुण कुमार वर्मा, बाबा गुरुकुल एकेडेमी के प्रबंधक हरपाल सिंह, जिला आयोजन समिति के सचिव शैलेन्द्र सिंह, चंद्रशेखर कांडपाल, राजीव श्रीवास्तव, जीआईसी सूरतगंज के प्रधानाचार्य डॉ अजय कुमार वर्मा, जीआईसी सिरौलीगौसपुर प्रधानाचार्य डॉ विजय कृष्ण यादव तथा अनेक शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रही। कार्यशाला में कुल 291 शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। आयोजक विद्यालय फाउंडेशन स्कूल की प्रबन्धक मंजू मिश्रा एवम प्रधानाचार्य नीता मिश्रा ने अतिथियों को पौध भेंटकर उनके प्रति आभार ज्ञापित किया।

सांसद ने नानपारा की सीमा विस्तार को लेकर भेजा पत्र

बहराइच। नगर पालिका परिषद के सीमा विस्तार को लेकर सांसद ने शासन को पत्र भेजा है। मामले में रविवार को सांसद ने एसडीएम से वार्ता कर नपाप के सीमा विस्तार पर चर्चा कर रूपेरखा तैयार की है। जिले के सांसद अक्षयवर लाल गौड़ ने नगर निकाय चुनाव से पूर्व नानपारा नगर पालिका परिषद के सीमा विस्तार को लेकर प्रयास शुरू कर दिया है। मामले में सांसद गौड़ ने शासन को पत्र भेजकर नगर पालिका परिषद नानपारा में शामिल होने वाले गांवों का उल्लेख करते हुए नपाप क्षेत्र में सीमा विस्तार को आवश्यक बताया है।

शासन ने सांसद के पत्र को संज्ञान में लेते हुए डीएम को अग्रिम कार्रवाई के लिए पत्र भेजा था। डीएम को पत्र मिलने के बाद सांसद गौड़ ने नानपारा एसडीएम अजीत परेश के साथ बैठक कर सीमा विस्तार के लिए नगर पालिका का क्षेत्रफल बढ़ाने व इसमें शामिल होने वाले गांवों के बारे चर्चा करते हुए गांवों को सूची एसडीएम को सौंपी है। सांसद गौड़ ने बताया कि नगर पालिका नानपारा के परिसीमन को लेकर वह पहले से ही प्रयासरत हैं।

देश में हा-हा कार मचा हुआ है और विकास के सारे रास्ते बन्द : श्रेया वर्मा

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। सर्वोदय इण्टर कालेज न्योछना में स्थापना दिवस के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुश्री श्रेया वर्मा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महिला सभा समाजवादी पार्टी ने दीप प्रजुलित कर शुभारम्भ किया। इस मौके पर अतिथि राजेन्द्र प्रसाद वर्मा पप्पू पूर्व जिला पंचायत सदस्य, व्यास सोनम वर्मा, करन मिश्रा, रामशंकर यादव, विधायक के अध्यक्ष धर्मराज वर्मा, प्रबन्धक बाबादीन यादव, उपप्रबन्धक उदय प्रताप वर्मा, स्वामी प्रसाद यादव प्रधानाचार्य, एम०पी० रावत, बासदेव, अखिलेन्द्र यादव, मौला बक्श, मुकेश वर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि श्रेया वर्मा ने अपने सम्बोधन में आजादी के 75वें साल में भी देश में हाँ–हाँ कार मचा हुआ है। विकास के सारे रास्ते बन्द हो चुके है। किसान, नौजवान, बेरोजगार, व्यापारी, गरीब आत्म हत्या करने पर मजबूर है। इसका कारण मंहगाई। आज देश में किसान अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा नही दे पा रहा है। खेती मंहगाई के कारण नही कर पा रहा है। इसकी जिम्मेदारी भारत व प्रदेश सरकार की है। वर्तमान सरकार ने कहा कि किसानों की आमदनी दो गुनी कर देगें। उक्त सभा में उपस्थित लोगों से पूछा कि क्या आमदनी दो गुनी होगी गयी उत्तर न में आया। भारत में होनहार शिक्षक, डॉक्टर, इंजिनियर अब्दुल कलाम जैसे लोगों ने जन्म लिया लेकिन फिर भी हमारा देश इन सभी समस्याओं से जूझ रहा है और भारत ताकतवर व नौजवान आत्म निर्भर नही हो पा रहा है। शिक्षा वो हथियार है जिससे सारे मार्ग प्रास्त किये जा सकते है नौजवानों की बेरोजगारी भी दूर हो सकती है। विशिष्ट अतिथि राजेन्द्र वर्मा ने कहा कि कर्म ही पूजा है। पूजा ही धर्म है ध र्म ही इन्सानियत है। इन्सानियत ही शिक्षित होने का प्रमाण है। स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित छात्र छात्राओं से हाथ उठवाकर संकल्प दिलाया कि खुद पढेगे और अपने परिवार को भी शिक्षित करेगें।

चेक चोरी कर फर्जी दस्तखत करने के मामले में केस दर्ज

बहराइच। यूपी के टाप 50 चिन्हित भू माफिया देवेन्द्र सिंह गब्बर उर्फ राजेश सिंह पर दर्ज धोखाधड़ी के केस में नाटकीय मोड़ आ गया है। विवेचना में बैंक खाता बंद मिलने पर एडीजी जोन ने इसे गंभीरता से लिया है। उनके हस्तक्षेप पर देवेन्द्र के भाई व मोहनपुर माफी प्रधान की तहरीर पर गब्बर के विरुद्ध केस दर्ज कराने वाले पर चोरी व धोखाधड़ी का केस दर्ज कर लिया है। देहात कोतवाली में 22 जून 2021 को अयोध्या जिले के कैंट थाने के बेगमपुर गढ़ैया निवासी दिनेश पाठक उर्फ गिल्टू पाठक ने देवेन्द्र सिंह गब्बर उर्फ राजेश सिंह पर धोखाधड़ी व लोक सम्पत्ति क्षति निवारण अधिनियम में केस दर्ज कराया था। जिसमें उल्लेख था कि दिनेश पाठक ने प्रापर्टी कारोबार में हिस्सेदारी को देवेन्द्र प्रताप सिंह को इस समझौते के तहत 12 लाख रुपये नकद दिए।

संक्षिप्त खबरे

पेड़ से लटकते मिला अधेड़ का शव

बस्ती। पैकोलिया थानांतर्गत महादेवा गांव में जूनियर हाईस्कूल के पीछे पेड़ से बंधे रस्सी के फंदे से एक अधेड़ का शव लटकते देख सनसनी फैल गई। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे एसओ पैकोलिया दुर्गेश पांडेय ने शव को नीचे उतरवाया। मृतक की शिनाख्त किशन (50) निवासी महादेवा गांव के रुप में हुई। फिलहाल पुलिस मौत की वजह जानने की कोशिश में लगी है। परिजनों की सहमति के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

ट्रक के नीचे आठ घंटे तक दबा रहा पीआरडी जवान, मौत

बस्ती। हरैया थानांतर्गत फोरलेन पर भदावल के पास सोमवार को भोर में चार बजे श्रीनगर से उधमपुर जम्मू काश्मीर से पटना जा रहा सेब लदा ट्रक बेकाबू होकर पलट गया। उसके नीचे साइकिल सवार एक पीआरडी जवान दब गया। लेकिन इसकी भनक किसी को नहीं लगी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल चालक कृष्णपाल सिंह निवासी उधमपुर और चालक राकेश सिंह को सीएचसी हरैया पहुंचाया। इसी बीच पूर्वाह्न करीब 11 बजे थाना क्षेत्र के गोपालपुर गांव निवासी पीआरडी जवान रामसेवक (45) पुत्र रामसजन को तलाशते हुए परिजन थाने पर पहुंचे। परिजनों ने बताया कि रामसेवक ड्यूटी कर घर नहीं पहुंचे हैं। पुलिस तलाश में जुट गई। परिजनों की आशंका पर ग्रामीणों के साथ पुलिस ने सेव की सैकड़ों पेटी हटाकर क्रेन से ट्रक को उठवाया तो नीचे साइकिल समेत पीआरडी जवान रामसेवक की लाश मिली। परिजन चीखने–चिल्लाने लगे। मश्तक के पुत्र संदीप कुमार की तहरीर पुलिस ने ट्रक चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मश्तक के तीन बेटे और एक बेटी है। बच्चों के साथ ही पत्नी बिट्टन का रो–रो कर बुरा हाल था। लोगों में चर्चा थी कि अगर पुलिस ने घटना के समय ही ट्रक को क्रेन से उठवा दिया होता तो शायद नीचे दबे रामसेवक को जिंदा बचा लिया गया होता। सभी पुलिस की इस लापरवाही को आक्रोशित थे।

चोरी के सात विद्युत मोटर पंप बरामद, दो गिरफ्तार

बस्ती। सूखे की स्थिति में खेत की सिंचाई करते समय चोरी किए गए सात विद्युत मोटर पंप नगर पुलिस ने बरामद किया है। चोरों ने यह सभी मोटर किसी न किसी को बेच दिया था। पुलिस ने मोटर चोर गिरोह के दो गुर्गों को गिरफ्तार कर सभी मोटर बरामद किया। पुलिस की इस कार्रवाई से किसानों ने राहत की सांस ली है। इन दिनों दिन–रात वे इन्हीं मोटर के सहारे सूखे से झुलस रही फसल को बचाने में लगे हैं। पिछले दिनों थाना क्षेत्र के कुछ अन्य स्थानों पर हुई मोटर पंप चोरी से संबंधित गिरोह पकड़ा गया था। जिनके जरिए कुछ अन्य सदस्यों का नाम सामने आया था। उसी आधार पर थाना क्षेत्र के मरहा निवासी मुकेश और इसी थाने के नरायनपुर निवासी प्रदीप को महरीपुर व कुसमौर जाने वाली पुलिया के पास पकड़ा। एसओ धर्मेंद्र तिवारी के मुताबिक वे लोग सड़क पर खड़े होकर किसी वाहन का इंतजार कर रहे थे। थाने ले जाकर पूछताछ में मुकेश और प्रदीप ने नगर थाना क्षेत्र के बंजरिया व कप्तानगंज थाना क्षेत्र के कोईलपुरा के सीवान समेत अन्य जगहों से मोटर पंप चोरी की बात कबूल किया। दोनों की निशानदेही पर पुलिस ने अलग–अलग स्थानों से सात विद्युत मोटर बरामद किया। पुलिस की मोटर बरामदगी की कहानी में कई झोल है। सबसे बड़ी बात पुलिस का कहना है कि बोरे में भरकर दोनों आरोपी सात मोटर लेकर सड़क के किनारे वाहन का इंतजार कर रहे थे। जबकि एक बोरे में एक या दो मोटर से ज्यादा नहीं आ सकता है। सात मोटर के लिए कम से कम तीन–चार बोरे चाहिए। दो आरोपियों के सात मोटर पैदल लेकर निकलने की बात भी सही नहीं लगती, क्योंकि एक–एक मोटर का वजन 60–70 किलो से कम नहीं होगा। मगर पुलिस इस बावत कुछ भी स्पष्ट बोलने को तैयार नहीं है।

संकल्प है हमारा, स्वच्छ हो देश हमारा

बाराबंकी। तिरंगा शाखा के माध्यम से तिरंगा शाखा के कार्यकर्ताओं ने श्री नागेश्वर नाथ मंदिर के कुंड सहित पूरे मंदिर की सफाई की और संकल्प लिया की इसी तरह अपने गाँव, शहर, धार्मिक स्थल, शहीद स्मारक तथा अपने आस पास के सरोवरो को स्वच्छ बनायेंगे। इस मौके पर धर्मवीर सिंह ने कहा नरेंद्र मोदी ने वादा किया था कि 2019 तक हमारा भारत स्वच्छ हो जाएगा मगर भाजपा का यह वादा अन्य वादों के तरह बिल्कुल खोखला निकला। मगर हम लोग संकल्प लेते है की हम लोग हर सप्ताह में एक दिन भारत देश को स्वच्छ बनाने के लिए निरंतर अग्रसर होकर देते रहेंगे। इस मौके पर राकेश कुमार, जुगराज सिंह, अंकुर शर्मा, प्रणीत मौर्या, आलोक रंजन, आकाश वर्मा, पंकज वर्मा, प्रदीप प्रजापति, नफील खान, प्रदीप राजपूत, शुभम वर्मा, रंजीत कुमार, मुकेश सिंह, भगीरथ गौतम, अरविंद यादव आदि साथी उपस्थित रहे।

कच्ची शराब की धरपकड़,15 दिन में 3000 लीटर शराब नष्ट कराई, 217 आरोपियों को पकड़ा

गोण्डा। कच्ची शराब बनाने व बेंचने के धंधे में लिप्त लोगों पर पुलिस की नजर टेढ़ी हो गई है। पिछले 15 दिनों में पुलिस ने इन कारोबारियों पर प्रभावी कार्रवाई करते हुए तीन हजार लीटर से अधिक कच्ची शराब बरामद किया है। साथ ही कच्ची शराब गोरखधंधे में शामिल 217 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिले में कच्ची शराब बनाने का धंधा खूब फलफूल रहा है। कई थाना क्षेत्रों में कच्ची शराब का यह कारोबार कुटीर उद्योग का रूप से चुका है। जिले के नवाबगंज, कोतवाली देहात,कौड़िया, मोतीगंज, मनकापुर,धानेपुर, उमरीबेगमगंज समेत कई थाना क्षेत्रों में कच्ची शराब का धंधा कुटीर उद्योग का रूप ले चुका है।

ज्ञानवापी विवाद में कोर्ट केफैसले का संतों ने किया स्वागत

अयोध्या। ज्ञानवापी मामले में न्यायालय के फैसले का अयोध्या के संतों ने स्वागत किया है। श्रीरामवल्लभाकुंज के प्रमुख राजकुमार दास ने कहा कि न्यायालय ने सुनवाई का मार्ग तय कर एक सत्य को सामने लाने का अवसर दिया है। जिसका हम सभी संत स्वागत करते हैं। स्वामी राजकुमार दास ने कहा कि भव्य श्रीराम मंदिर एएसआई के उत्खनन के बाद सामने आए सत्य तथ्यों के बाद ही संभव हो पा रहा है। ज्ञानवापी मामले में जब सुनवाई होगी तो ऐतिहासिक सच सामने आ जाएगा। यह वह सत्य होगा। जिसको लंबे समय से सामने आने से रोका जा रहा है। श्रीरामलला के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने फैसले का स्वागत किया है। उनका कहना है कि मुस्लिम पक्ष की दलील थी उस को खारिज किया है और हिंदू पक्ष की दलील को रखा है। आशा है कि अगले तारीख यानी 22 सितंबर तक इसका फाइनल रिजल्ट आ जाएगा। जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामदिनेशाचार्य ने वाराणसी श्रृंगार गौरी केस में कोर्ट के फैसले को ऐतिहासिक बताया। उन्होंने कहा कि अयोध्या सहित देश के साधु संतो में प्रसन्नता है। मुस्लिम आक्रांताओं ने हिन्दुओं की आस्था को खंडित किया। उसके पुनरुत्थान का समय आ गया। मुस्लिमों की याचिका खारिज किया गया जो स्वागत योग्य है। मुगलों की परंपराओं का समापन होना चाहिए। राष्ट्रीय परंपरा की स्थापना होनी चाहिए। हनुमानगढ़ी के पुजारी राजदास का कहना है कि देश में संवैधानिक क्रांति की जरूरत है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा है कि विदेशी आक्रांताओं की निशानी हटाया जाना चाहिए। संविधान में आस्था के साथ कोर्ट को साधुवाद आज विजय मिली।

फर्जी मार्कशीट मामले में खब्बू तिवारी को एससी से जमानत

प्रयाग दर्पण संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या में गोशाईगंज के पूर्व विधायक खब्बू तिवारी को फर्जी मार्क शीट मामले में सुप्रीम कोर्ट ने जमानत दे दी है। कोर्ट ने उनकी सजा पर रोक लगाने के साथ ही उन्हें 3 दिन के अंदर जेल से रिहा करने का आदेश दिया है। इसके साथ ही कोर्ट ने उच्च न्यायालय के निचली कोर्ट के सजा बरकरार रखने के आदेश को भी खारिज कर दिया हैस खब्बू तिवारी को जमानत मिलने पर उनके समर्थकों में खुशी की लहर है। उनके करीबी राजेश कुमार मिश्र ने सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को न्याय की जीत बताया है। इंद्र प्रताप तिवारी उर्फ खब्बू तिवारी को फैजाबाद न्यायालय की जज पूजा सिंह ने फर्जी

मार्क शीट के मामले में 15 अक्टूबर 2021 को 5 साल की सजा सुनाई थी। इस आदेश को उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ की न्यायमूर्ति संगीता चंद्रा ने जनवरी 2022 के आदेश में बरकरार रखा था। खब्बू तिवारी इस समय फैजाबाद जेल में बंद हैं। इसके बाद भाजपा के टिकट पर उनकी ध र्मपत्नी आरती तिवारी ने विधानसभा चुनाव लड़ी थी। हांलाकि वे सपा के प्रतिद्वंदी अभय सिंह को कड़ी टक्कर देने के बावजूद चुनाव हार गई थी। खब्बू तिवारी श्रीराम एयरपोर्ट में किसानों की जमीन दिलाने के बाद अपनी लोकप्रियता के बाद वे विरोधियों के निशाने पर आ गए थे।– इंद्र प्रताप तिवारी उर्फ खब्बू तिवारी पर 6 से ज्यादा केस दर्ज हैं, जिनमें कई गंभीर धाराएं शामिल हैं। – उनके खिलाफ दर्ज मुकदमों में 302,307, 308, 386, 323, 420, 467, 471, 504, 506, 147, 148, 149, 307, 120बी, जैसी धाराओं में कई बार केस दर्ज हो चुके हैं। – खब्बू तिवारी को पूर्वांचल का दबंग कहा जाता है।

ट्रेनों में अब टीवी का भी लिजिए आनंद

बस्ती। ट्रेनों से सफर करने वाले यात्रियों के लिए अच्छी खबर है। यात्रा के दौरान यात्री अब ट्रेन में टीवी पर समाचार, खेल और मनोरंजक जैसे कार्यक्रम का आनंद उठा सकेंगे। इसके लिए रेलवे ने सबसे पहले लखनऊ–गोरखपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेन के एसी चौयरकार कोच में एलईडी टीवी लगाकर यह सुविधा प्रदान की है। इसके अलावा कुछ अन्य ट्रेनों में भी इसी तरह की अत्याधुनिक सुविधाएं देने का निर्णय लिया गया है। पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल द्वारा नवाचार नीति के अंतर्गत मंडल की चार ट्रेनों में रेल यात्रियों को मनोरंजन के लिए वातानुकूलित कोचों में एलईडी टीवी स्क्रीन लगाए जाने का निर्णय लिया गया है। जिसमें गाड़ी संख्या 12532 लखनऊ–गोरखपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस में यह सुविधा शुक्रवार से शुरू कर दी गई है। जहां ट्रेनों से सफर करने वाले यात्री ट्रेन में मनोरंजन का लुत्फ उठा रहे हैं। इसके अलावा तीन अन्य ट्रेनों में भी जल्द यह सुविधा शुरू होगी है। लखनऊ मंडल के जनसंपर्क अधिकारी महेश कुमार ने बताया कि इंटरसिटी एक्सप्रेस में एलईडी टीवी की नवीन सुविधा शुरू कर दी गई है।

पांडेय बाजार क्रॉसिंग पर ओवरब्रिज की मांग तेज करेंगे व्यापारी

बस्ती। उत्तर प्रदेश आदर्श व्यापार मंडल व्यापारियों की समस्या के निराकरण के लिए तब तक संघर्ष करता रहेगा, जब तक समाधान नहीं हो जाता है। कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं, जिसके समाधान के लिए सबको मिलकर लंबी लड़ाई लड़नी पड़ती है। संगठन इसके लिए तैयार है। पांडेय बाजार क्रॉसिंग पर ओवरब्रिज के निर्माण की मांग अब तेज की जाएगी। यह कहना है संगठन के जिला अध्यक्ष सुनील कुमार गुप्त का। वह पुरानी बस्ती स्थित कैंप कार्यालय पर व्यापारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक दो प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई थी, जिसमें पांडेय बाजार क्षेत्र के रेलवे क्रॉसिंग 199 स्पेशल पर ओवरब्रिज के निर्माण की मांग व बीडीए की ओर से लागू किए जाने वाले महायोजना पर व्यापक चर्चा हुई। जिला अध्यक्ष ने कहा कि ब्रिज निर्माण को लेकर संगठन निरंतर प्रयासरत है। जल्दी ही व्यापारियों का प्रतिनिधि मंडल लखनऊ जाकर डीआरएम को ज्ञापन देकर ब्रिज निर्माण की मांग करेगा। कार्यवाहक अध्यक्ष विश्वनाथ वर्मा, महामंत्री मनमोहन श्रीवास्तव ने विकास प्राधिकरण की ओर से लागू होने वाले महायोजना पर कहा कि शहर के नागरिकों सहित व्यापारियों में भी इसे लेकर डर और दहशत का माहौल है। बीडीए की ओर से कार्य योजना स्पष्ट न करने के कारण व्यापारी एवं नागरिक भ्रमित हैं। संगठन बस्ती विकास प्राधिकरण के सचिव से मिलकर उन्हें शीघ्र ही ज्ञापन देकर मांग करेगा कि वह स्पष्ट करें कि महायोजना में कौन–कौन सी योजनाएं हैं। बैठक को वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनिल गुप्ता, नसीम अली खान, संजय गुप्त, राजेश व मंगल सिंह ने भी संबोधित किया। इस मौके पर संतोष कुमार, संजय मद्धेशिया उर्फ संजू, नंदकिशोर मद्धेशिया, विनीत मिश्रा, अनीश कुमार, अमित गुप्ता, आशीष गुप्ता, संजय गुप्ता आदि मौजूद थे।

गीत हमारे दुख और सुख दोनों को व्यक्त करते हैं : स्वप्निल श्रीवास्तव

प्रयाग दर्पण संवाददाता

बाराबंकी। गीत हमारे दुख और सुख दोनों को व्यक्त करते हैं। निशा जी के गीतों को पढ़िये तो वह सवाल करते हैं समाज से, ईश्वर से। निशा जी की रचनाओं में आम जनमानस की व्याकुलता स्पष्ट बयां होती है। उनकी रचनाओं में स्थानीयता के साथ ही लोक जीवन समाहित होने से रचनाएं अधिक प्रभावशाली हुई हैं।

यह बात कवयित्री रजनी श्रीवास्तव निशा की दो पुस्तकों काव्य संग्रह क्षितिज के उस पारज् तथा सोन चिरइया के विमोचन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार स्वप्निल श्रीवास्तव ने कही।

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम का आयोजन साहित्यकार समिति एवं यूनिक सोशल वेलफेयर सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में पटेल संस्थान निकट पटेल महिला महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन से हुआ। मंगलाचरण कवि विष्णु कुमार शर्मा

कुमार ने किया एवं सरस्वती वंदना गीतकार डॉ० कुमार पुष्पेन्द्र ने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि उ०प्र० हिन्दी संस्थान की संपादक डॉ० अमिता दुबे ने कवयित्री निशा को हार्दिक बध ाई देते हुए कहा कि उनके दोनों काव्य संग्रह में विषय की विविधता है। उनकी कविता में पारंपरिक बिंबों की जगह आधुनिक जीवन बोध को व्यंजित करने की प्रमुखता है। निशा जी ने अपने गीतों में जो एक भाव दिया है, वह उनकी आंतरिक संवेदना है, जो उनके गीतों को महत्वपूर्ण बनाती है। सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ० विनय दास ने कहा रजनी निशा के इन गीतों में लोकमंगल, लोक संस्कृति का स्वर प्रमुख है।

विषमताओं से परे एक नया शांतिपूर्ण आशियाना की खोज इनका मुख्य विषय है, जिसमें राष्ट्रप्रेम और प्रकृति प्रेम दोनों के स्वर हैं।

बच्चों का संस्कारी होना आवश्यक है जब भी स्मार्टफोन मिले उसका सद्प्रयोग करें

प्रयाग दर्पण संवाददाता

रामसनेहीघाट,बाराबंकी। क्षेत्र के हथौध ा स्टेट रानी शान्ति देवी ग्रुप आफ इन्स्टीट्यूट में स्मार्ट फोन वितरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि उ.प्र.सरकार राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार व विशिष्ट अतिथि एमएलसी अंगत सिंह रहे। कार्यक्रम का संचालन आचार्य मिथलेश वर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मंत्री श्री सिंह के भाई पूर्व रायवरेली विधायक रकेश प्रताप सिंह पहुंचे जिनका भव्य स्वागत किया गया।

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। विद्यालय के प्रचार्य डॉक्टर सुनील त्रिपाठी ने छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए बताया कि आज का युग बहुत ही कुछ करने का है जो फोन स्मार्टफोन बांटे जा रहे हैं। क्या जरूरत है ऐसी बातें घर में सुनाई पड़ती होंगी यशस्वी मुख्यमंत्री ने डीजी

प्रोग्राम किया है सब कुछ कंप्यूटर में कैद है हम उसका सद्प्रयोग करें मशीनरी सुचारू ढंग से चलती रहे तभी हमारी सफलता संभव है। जब हम इसका दुरुपयोग ना करके सद्प्रयोग करें। ओंकार नाथ सिंह एडवोकेट ने सभी बच्चों को संस्कारी होना आवश्यक बताते हुए कहा कि जब भी आपको स्मार्टफोन मिले उसे सद्प्रयोग करें जो भी बनना चाहते हो बन जाओगे अगर आईएस सोचा है तो आईएस बनोगे पूर्व विधायक राकेश प्रताप सिंह ने समारोह को संबोधित करते हुए कहां की शिक्षा के साथ संस्कार देना भी बहुत आवश्यक है। शिक्षा के साथ संस्कार अंकुश रहेगा तो बेहतर रहेगा। रामचरितमानस की पुस्तक ऑनलाइन उपलब्ध करा देने का आश्वासन दिया कहां रामायण एक ऐसा ग्रंथ है जो भाई और मां बहन सबके साथ कैसा व्यवहार करना है यह हमें सीख देता है। 2017 में जब से मैं विधायक बना तब से लगातार 24 से 26 घंटे क्षेत्र के एक के बाद एक दूसरे गांव में रामायण का पाठ चलता रहा। रायबरेली यह 150 किलोमीटर की परिधि में होता रहा है। उन्होंने कहा कि 164 ग्राम पंचायतें में हैं जिन छात्र छात्राओं को स्मार्टफोन मिल रहा है सब इस का सद्प्रयोग करें।

नि:शुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में 297 लोगों ने कराया परीक्षण

अयोध्या। ग्रामीण विकास एवं समश्द्धि पहल संस्था गोकुला की ओर से मिल्कीपुर ब्लाक क्षेत्र के गोकुला गांव स्थित मां आदिशक्ति मंदिर पर विशाल निरूशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जहां अयोध्या आई हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने नेत्र विकार से ग्रसित लोगों का निशुल्क परीक्षण कर दवाएं तथा परामर्श दिया। शिविर में 20 लोग गंभीर नेत्र रोग मोतियाबिंद से ग्रसित पाए गए। जिन्हें अस्पताल की शचल वैन से ऑपरेशन हेतु अस्पताल ले जाया गया।

ग्रामीण विकास और समश्द्धि पहल संस्था के अध्यक्ष आशुतोष सिंह आशु द्वारा आयोजित निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में पहुंचे। अयोध्या आई हॉस्पिटल के डॉक्टरों की टीम को अंग वस्त्र भेंट कर स्वागत सम्मान किया गया। शिविर में 297 लोगों ने अपना परीक्षण कराया। जिनमें 153 लोगों को निकट एवं दूर दृष्टि के चश्मे दिए गए।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य) द्वारा रमा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1–ए, बेली रोड, नया कटरा, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर, 1269/1073 मां श्री आश्रम, मालवीय नगर, बाबा जी का बाग, प्रयागराज से प्रकाशित।

–: संस्थापक :–

स्व0 श्रीकांत शुक्ल उर्फ स्वामी कांतेश्वरानंद भारती काली बाबा

संपादक

स्वतंत्र कुमार शुक्ल (याग्यवल्क्य)

मोबाइल नंबर 9450475366

Email

prayagdarpan@gmail.com

R.N.I. NO.UPHIN/2014/59804

इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन होंगे।